कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन - सोमवार 3 नवम्बर 2025 वर्ष-24 अंक - 9 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ -1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िये...

5

कृषि उत्पादन में प्रोम खाद की उपयोगिता

6

हरे पत्तेदार सब्जियां उगाएं

रजत जयंती वर्ष में छत्तीसगढ़ को राज्योत्सव में

प्रधानमंत्री ने नया विधानसभा भवन किया समर्पित

राज्योत्सव के दौरान नए विधानसभा भवन का लोकार्पण करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। इस अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला, छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री रोमेन डेका, मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह, उपमुख्यमंत्री श्री अरुण साव तथा केन्द्रीय आवास और शहरी कार्य राज्य मंत्री श्री तोखन साहू, उपस्थित थे।

रायपुर। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा नवा रायपुर में छत्तीसगढ़ विधानसभा के नए भवन के लोकार्पण के साथ ही विधानसभा के खुद के भवन का 25 साल का इंतजार खत्म हो गया। राज्य निर्माण के रजत जयंती वर्ष में राज्योत्सव के मौके पर छत्तीसगढ़ को अपना भव्य और आधुनिक विधानसभा भवन मिला। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मुख्य आतिथ्य में नए विधानसभा परिसर में आयोजित लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने कहा कि यह हम सबके लिए बहुत गौरव का क्षण है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का सदैव लोकतांत्रिक परंपराओं पर गहरा विश्वास रहा है। राज्य की समृद्धि और खुशहाली के फैसले अब इस भवन में होंगे।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा कि छ.ग. विधानसभा का पिछले 25 वर्षों में गौरवशाली इतिहास रहा है। राज्य सरकार पिछले 21-22 महीनों से मोदी की गारंटी को पूरा करने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि छ.ग. को अटलजी ने बनाया है और श्री मोदी इसे संवार रहे हैं। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

रबी में उर्वरकों पर मिलेगी 38 हजार करोड़ की सब्सिडी

केन्द्रीय कैबिनेट का फैसला

नई दिल्ली (कृषक जगत)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने रबी सीजन 2025-26 (1 अक्टूबर 2025 से 31 मार्च 2026 तक) के लिए फॉस्फेटिक और पोटाशिक उर्वरकों पर पोषक तत्व आधारित सब्सिडी दरें तय करने के उर्वरक विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। रबी सीजन 2025-26 के लिए अनुमानित बजटीय आवश्यकता लगभग 37,952.29 करोड़ रुपए होगी। यह खरीफ सीजन 2025 की बजटीय आवश्यकता से लगभग 736 करोड़ रुपए अधिक है।

डाई अमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) और एनपीकेएस (नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर) ग्रेड सहित पीएंडके उर्वरकों पर सब्सिडी रबी 2025-26 के लिए अनुमोदित दरों के आधार पर प्रदान की जाएगी ताकि किसानों को सस्ती कीमतों पर उर्वरकों की सुचारू उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

किसानों को लाभ : किसानों को सब्सिडी युक्त, किफायती और उचित मूल्य पर खाद मिलेगी।

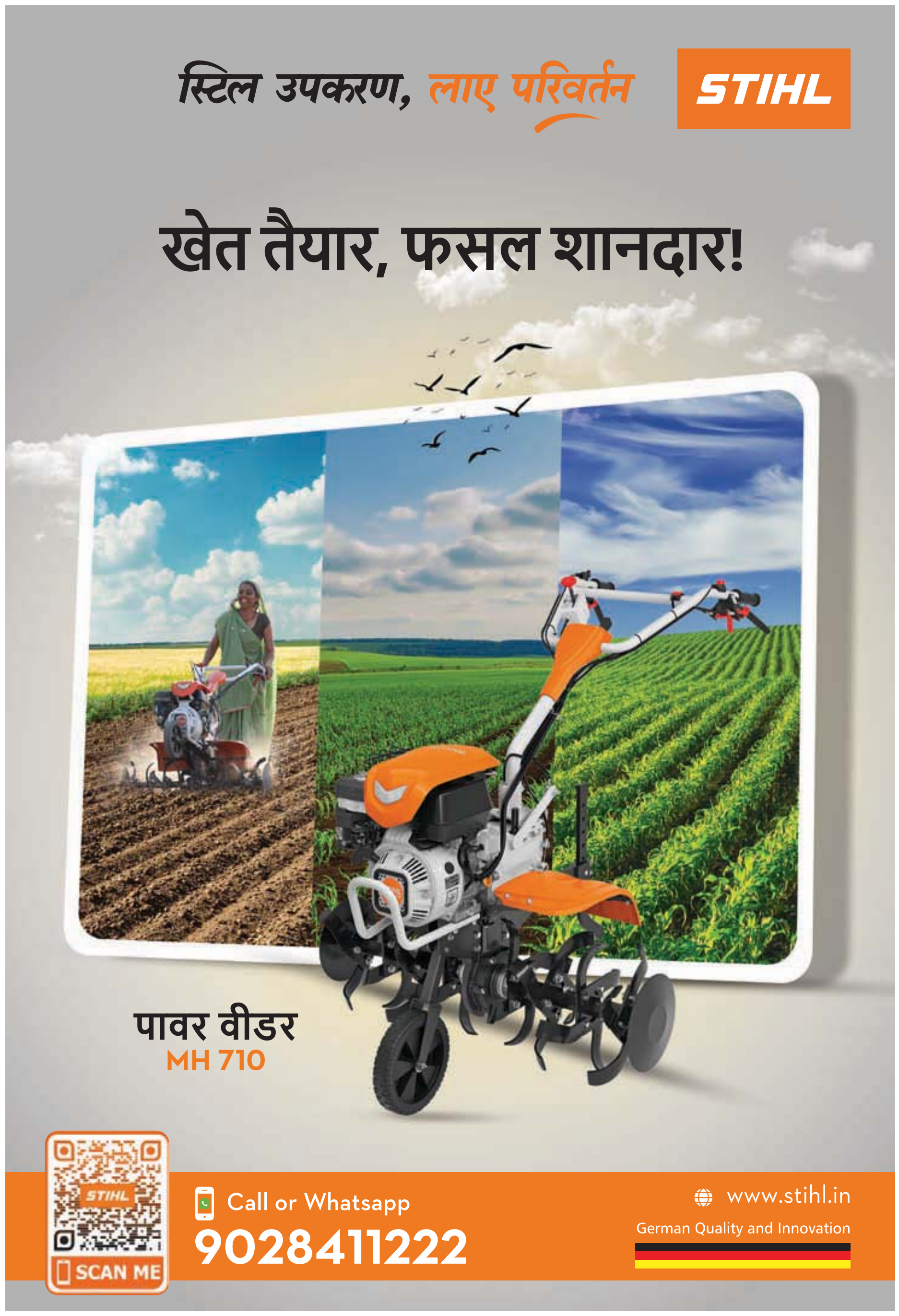

खेती की अधिक जानकारी के लिए देखें
www.krishakjagat.org

मध्य प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, महाराष्ट्र में होगी 15095 करोड़ की दलहन-तिलहन खरीदी

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने खरीफ 2025-26 के लिए दी मंजूरी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने खरीफ सीजन 2025-26 के लिए तेलंगाना, ओडिशा, महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश में दालों एवं तिलहनों की खरीदी योजनाओं को मंजूरी दी है। इन राज्यों के लिए स्वीकृत कुल खरीद राशि रु. 15095.83 करोड़ है, जिससे संबंधित राज्यों के लाखों किसानों को व्यापक लाभ मिलेगा। इन राज्यों के कृषि मंत्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय वर्चुअल बैठक में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह ने प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान सहित कृषि की योजनाओं के तहत ये स्वीकृतियां प्रदान कीं।

बैठक में चर्चा के बाद केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मध्य प्रदेश में खरीफ 2025-26 के दौरान सोयाबीन की 22,21,632 मीट्रिक टन की मूल्य अंतर भुगतान योजना के तहत लागू होगी, जिसके लिए रु. 1,775.53 करोड़ के वित्तीय प्रभाव की स्वीकृति केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने दी।

तेलंगाना में मूंग की कुल 4,430 मीट्रिक टन खरीद मूल्य समर्थन योजना के तहत रु. 38.44 करोड़ की स्वीकृति दी। उड़द की शत-प्रतिशत खरीद होगी, वहीं सोयाबीन की 25 प्रतिशत खरीद की स्वीकृति दी गई है। इसी प्रकार, ओडिशा राज्य में अरहर की 18,470 मीट्रिक टन (राज्य उत्पादन का 100%) खरीद को PSS के तहत रु. 147.76 करोड़ के बजट के साथ मंजूरी दी है।

महाराष्ट्र में केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने मूंग की 33,000 मीट्रिक टन, उड़द की 3,25,680 मीट्रिक टन और सोयाबीन की 18,50,700 मीट्रिक टन कुल मात्रा को PSS के अंतर्गत क्रमशः रु. 89.34 करोड़, रु. 2540.30 करोड़ और रु. 9,860.53 करोड़ की कुल लागत पर मंजूरी दी है।

श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि ये मंजूरियां इसलिए दी गई हैं ताकि किसानों को उनकी फसल पर बेहतर लाभ मिल सके।

कृषि क्षेत्र में प्रगति की समीक्षा

केंद्रीय कृषि मंत्री ने प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय कैबिनेट द्वारा खाद सब्सिडी के लिए 38 हजार करोड़ रुपये जारी करने के फैसले पर किसानों की ओर से आभार व्यक्त किया। श्री चौहान की अध्यक्षता में आयोजित समीक्षा बैठक में बताया गया कि खरीफ-2025 के दौरान फसलों की बुवाई काफी अच्छी हुई है। खरीफ-2025 के लिए धान की बुवाई का कुल आंकड़ा 441.58 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की अपेक्षा अधिक है। वहीं, तिलहनी फसलों का अखिल भारतीय क्षेत्र 190.13 लाख हेक्टेयर तक दर्ज किया गया, जिसमें सोयाबीन एवं मूंगफली प्रमुख हैं। इसी तरह, दालों का क्षेत्र 120.41 लाख हेक्टेयर तक पहुंचा है, जो पोषण सुरक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि है, वहीं गन्ने का क्षेत्र 59.07 लाख हेक्टेयर तक रहा हैं, जिससे गन्ना उत्पादक किसानो को सीधा फायदा होगा।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि आगामी रबी मौसम में दलहनी और तिलहनी फसलों की ज्यादा बुवाई के लिए और रिकॉर्ड उत्पादकता प्राप्त करने के लिए केंद्र सरकार, प्रदेशों के साथ मिलकर हरसंभव सहायता किसानों को उपलब्ध कराएगी।

बैठक में कृषि आयुक्त डॉ. पी.के. सिंह ने केंद्रीय कृषि मंत्री को बताया कि देशभर में सिंचाई परियोजनाओं एवं जलाशयों के लिए जल उपलब्धता में वृद्धि हुई हैं, जिससे सिंचाई आधारित कृषि क्षेत्रों में भी कृषि विकास संभव हुआ है।

छोटे किसानों तक पहुंचे अच्छी क्वालिटी के बीज

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने, नई दिल्ली में राष्ट्रीय बीज निगम (NSC) के नव-स्थापित अत्याधुनिक सब्जी एवं पुष्प बीज प्रसंस्करण संयंत्र और पैकिंग इकाई का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने बरेली, धारवाड़, हसन, सूरतगढ़ और रायचूर स्थित एनएससी के पांच बीज प्रसंस्करण संयंत्रों का वर्चुअल उद्घाटन भी किया।

पूसा, नई दिल्ली स्थित बीज भवन में स्थापित सब्जी बीज प्रसंस्करण संयंत्र की क्षमता 1 टन प्रति घंटा है, जबकि एनएससी के अन्य पांचों संयंत्रों की क्षमता 4 टन प्रति घंटा रखी गई है। ये संयंत्र अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित हैं, जिससे किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीजों की उपलब्धता सुनिश्चित होगी और बीज उत्पादन की गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी, NSC की CMD और मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव मनिंदर कौर द्विवेदी, संयुक्त सचिव श्री अजीत कुमार साहू सहित NSC तथा कृषि मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

लाल चंदन की खेती करने वाले 18 किसानों को मिले 55 लाख

राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण ने जारी की राशि

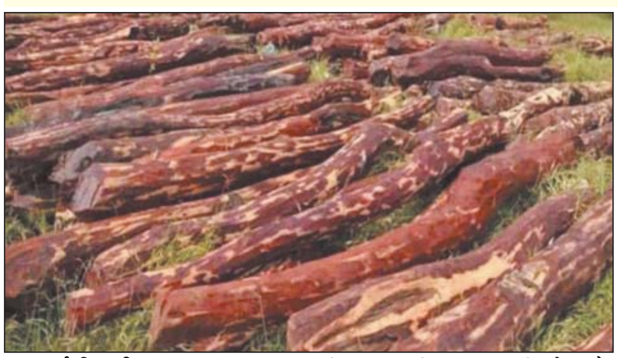

नई दिल्ली (कृषक जगत)। राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (एनबीए) ने राज्य जैव विविधता बोर्ड के माध्यम से तमिलनाडु में लाल चंदन (प्टेरोकार्पस सैंटालिनस) के 18 कृषकों को 55 लाख रुपये जारी किए हैं। ऐसा भारत के जैविक संसाधनों के निरंतर उपयोग को बढ़ावा देने के लिए पहुंच और लाभ साझाकरण (एबीएस) ढांचे के तहत किया गया। ये किसान तिरुवल्लूर जिले के कन्नभिरन नगर, कोथुर, वेम्बेडु, सिरुनीयुम, गुनीपलायम, अम्मामबक्कम, अलीकुझी और थिम्माबूपोला पुरम नामक 8 गांवों के निवासी हैं।

एनबीए ने 2015 में लाल चंदन पर एक विशेषज्ञ समिति गठित की थी जिसकी सिफारिश पर किसानों को 55 लाख रुपये जारी किए गए है। समिति ने 'लाल चंदन के उपयोग से उत्पन्न संरक्षण, सतत उपयोग और उचित एवं न्यायसंगत लाभ बंटवारे की नीति' शीर्षक से एक व्यापक रिपोर्ट तैयार की। समिति की सिफारिशों का एक प्रमुख परिणाम विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) द्वारा 2019 में नीतिगत छूट देना था, जिससे खेती वाले स्रोतों से लाल चंदन के निर्यात की अनुमति मिल गई। यह कृषि-आधारित संरक्षण और व्यापार को एक महत्वपूर्ण बढ़ावा है।

लाल चंदन पूर्वी घाटों की एक स्थानिक प्रजाति है, जो केवल आंध्र प्रदेश में पाई जाती है। इसका पारिस्थितिक, आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व है। इसकी खेती आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, ओडिशा और अन्य राज्यों में भी की जाती है।

आगरा में बनेगा सी-सार्क केंद्र

आलू उत्पादन और निर्यात को मिलेगी नई उड़ान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी की अध्यक्षता में अंतरराष्ट्रीय आलू केंद्र (CIP) के महानिदेशक श्री साइमन हेक और प्रस्तावित सी-सार्क - इंटरनेशनल पोटैटो सेंटर - (साउथ एशिया रीजनल सेंटर) की समन्वय समिति के अन्य सदस्यों की पहली बैठक आयोजित हुई।

बैठक में केंद्र की कार्ययोजना और संदर्भ शर्तों के अनुसार भविष्य की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की गई।

आगरा में स्थापित होने जा रहा यह केंद्र भारत को आलू और शकरकंद के उत्पादन, प्रसंस्करण और निर्यात के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व प्रदान करेगा। इसके माध्यम से कृषि उत्पादकता बढ़ाने, उत्पाद की गुणवत्ता को अंतरराष्ट्रीय मानकों तक पहुँचाने, निर्यात में वृद्धि करने तथा नए रोजगार अवसर सृजित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति होगी।

सी-सार्क केंद्र आत्मनिर्भर भारत के विजन को सशक्त करेगा और किसानों को आधुनिक तकनीक, अनुसंधान तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग से लाभान्वित करेगा।

छत्तीसगढ़ की विकास यात्रा और 'मोदी की गारंटी' का दस्तावेज 'कॉफ़ी टेबल बुक' का विमोचन

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित राज्योत्सव कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'कोसा कॉफी टेबल बुक' का विमोचन किया। जनसंपर्क विभाग का यह विशेष प्रकाशन प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ में हुए जन-कल्याणकारी कार्यों और विकास यात्रा का विस्तृत दस्तावेज़ प्रस्तुत करता है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा कि यह कॉफी टेबल बुक श्री मोदी की गारंटी के अंतर्गत पूरे हुए विकास कार्यों का प्रमाण है। इसमें उन योजनाओं और पहल का समावेश है, जिन्होंने छत्तीसगढ़ की धरती पर विश्वास, विकास और पारदर्शिता का नया अध्याय लिखा है।

'मोदी की गारंटी' – विकास के सशक्त उदाहरण

'कॉफी टेबल बुक' में प्रमुख रूप से प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत गरीब परिवारों को मिले आवास, किसानों को दी गई धान बोनस राशि, कृषक उन्नति योजना के तहत हुए कृषि सुधार, तथा लोक सेवा आयोग (PSC) परीक्षा मूल्यांकन प्रणाली में लायी गई पारदर्शिता जैसे अनेक जनहितकारी सुधारों का विस्तारपूर्वक विवरण शामिल है।

जन-कल्याण से सुशासन तक की यात्रा

'कॉफी टेबल बुक' में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में संचालित विभिन्न केंद्रीय योजनाओं – जैसे प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, उज्ज्वला योजना, हर घर जल मिशन, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, और डिजिटल प्रशासनिक सुधार – के माध्यम से छत्तीसगढ़ में आए सकारात्मक परिवर्तनों को चित्रों और आँकड़ों के माध्यम से जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है।

राज्य की प्रगति का जीवंत चित्रण

यह पुस्तक न केवल योजनाओं की जानकारी देती है, बल्कि यह बताती है कि किस प्रकार केंद्र और राज्य सरकार के समन्वय से आम नागरिकों का जीवन बदला है। ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, युवाओं के अवसर, स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और प्रशासनिक पारदर्शिता के क्षेत्र में हुए कार्यों को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है।

रजत जयंती वर्ष में छत्तीसगढ़ को... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा कि 25 वर्ष पहले स्वर्गीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने राज्य का निर्माण किया था और आज ही यह अपने निर्माण से विधान तक का सफर पूरा कर रहा है। राज्यपाल श्री रमेन डेका, केन्द्रीय आवास और शहरी कार्य राज्य मंत्री श्री तोखन साहू, उप मुख्यमंत्रीद्वय श्री अरुण साव और श्री विजय शर्मा, संसदीय कार्य मंत्री श्री केदार कश्यप, नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत और सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल भी विधानसभा भवन के लोकार्पण कार्यक्रम में शामिल हुए।

कृषि-प्रधान संस्कृति और बस्तर के काष्ठ शिल्प की झलक

'धान का कटोरा' कहलाने वाले छत्तीसगढ़ की पहचान को इस भवन की वास्तुकला में बखूबी पिरोया गया है। विधानसभा के सदन की सीलिंग पर धान की बालियों और पत्तियों को उकेरा गया है, जो प्रदेश की कृषि-प्रधान संस्कृति का प्रतीक है। भवन के ज्यादातर दरवाजे और फर्नीचर बस्तर के पारंपरिक काष्ठ शिल्पियों द्वारा बनाए गए हैं। इस तरह नया विधानसभा भवन आधुनिकता और परंपरा का एक जीवंत संगम बन गया है।

324 करोड़ की लागत से बना 51 एकड़ में फैला परिसर

कुल 51 एकड़ में फैले इस परिसर का निर्माण 324 करोड़ रुपए की लागत से किया गया है। भवन को तीन मुख्य हिस्सों—विंग-ए, विंग-बी और विंग-सी—में विभाजित किया गया है। विंग-ए में विधानसभा का सचिवालय, विंग-बी में सदन, सेंट्रल हॉल, मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष के कार्यालय, तथा विंग-सी में मंत्रियों के कार्यालय स्थित हैं।

डिजिटल क्रॉप सर्वे, गिरदावरी के

मोबाइल PV APP सत्यापन की समय सीमा बढ़ी

रायपुर। किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए राज्य के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग ने डिजिटल क्रॉप सर्वे एवं गिरदावरी के मोबाइल PV APP सत्यापन की अंतिम तिथि बढ़ा दी है। अब यह प्रक्रिया 31 अक्टूबर 2025 के स्थान पर 30 नवम्बर 2025 तक जारी रहेगी।

राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री श्री टंकराम वर्मा ने इस निर्णय को किसानों के हित में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों को डिजिटल प्रणाली के माध्यम से और अधिक पारदर्शिता तथा सुविधा प्रदान करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है।

खाद्य विभाग के संयुक्त सचिव द्वारा जारी आदेश के अनुसार, PV APP के माध्यम से फील्ड सत्यापन उपरांत प्रविष्टियों में संशोधन की प्रक्रिया अब निर्धारित नई तिथि तक की जा सकेगी।

मंत्री श्री वर्मा ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी जिलों में गिरदावरी एवं डिजिटल क्रॉप सर्वे कार्य समयसीमा के भीतर पूर्ण किए जाएं, ताकि किसानों को योजनाओं का लाभ समय पर मिल सके।

राज्य गठन के बाद बस्तर में 54 सिंचाई योजनाओं का हुआ निर्माण

जिले में 23 हजार हेक्टेयर से अधिक सिंचित रकबा बढ़ा

छत्तीसगढ़ राज्य को उदित हुए 25 वर्ष की अवधि में बस्तर जिले के अंतर्गत किसानों को सिंचाई संसाधन उपलब्ध करवाने के लिए सकारात्मक प्रयास किया गया है। जिसके फलस्वरूप अब तक कुल 92 सिंचाई योजनाओं के माध्यम से 32 हजार 656 हेक्टेयर सिंचित रकबे का सृजन किया गया है। बस्तर जिले में छत्तीसगढ़ राज्य गठन के पूर्व 38 लघु सिंचाई योजनाओं से 7521 हेक्टेयर खरीफ एवं 1386 हेक्टेयर रबी कुल 8907 हेक्टेयर रकबे में सिंचाई हो रही थी।

छत्तीसगढ़ राज्य गठन के बाद किसानों को खेती-किसानी के लिए ज्यादा से ज्यादा सिंचाई साधन उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से जिले में 54 सिंचाई योजनाओं का निर्माण कर 23 हजार 749 हेक्टेयर सिंचित रकबा का सृजन किया गया है। जिसमें 18 हजार 129 हेक्टेयर खरीफ और 5620 हेक्टेयर रबी फसल हेतु सिंचाई क्षेत्र विकसित किया गया है। इन सभी सिंचाई संसाधनों के माध्यम से क्षेत्र के किसानों द्वारा द्विफसलीय खेती-किसानी को बढ़ावा देकर आय संवृद्धि किया जा रहा है।

कोसारटेडा, बेदारमुंडा एवं टिकरालोहंगा जैसी परियोजनाओं से

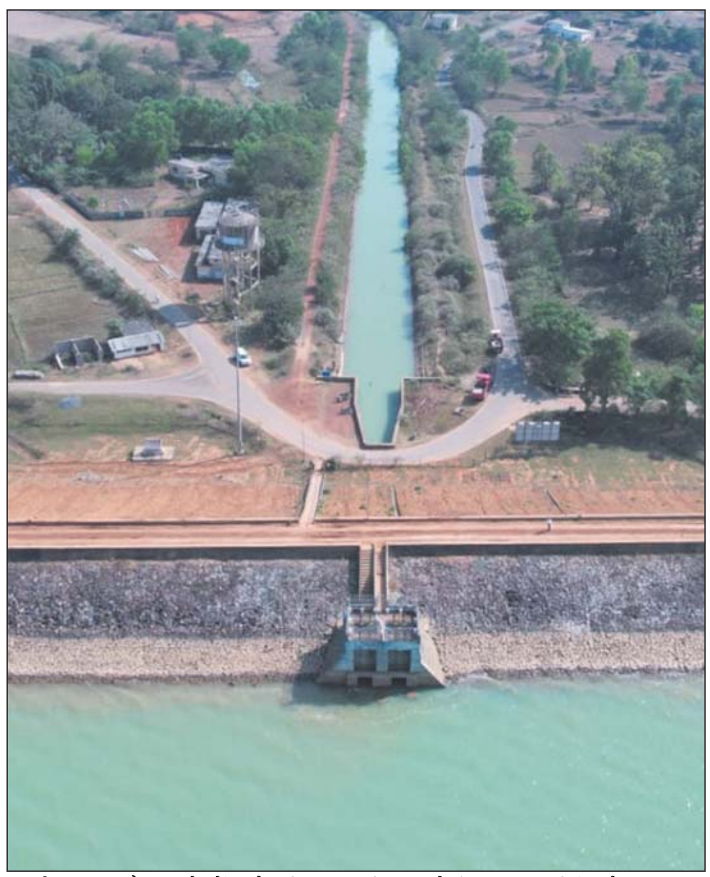

नगदी फसल के रकबे में हुई वृद्धि

छत्तीसगढ़ राज्य गठन के बाद जल संसाधन विभाग के द्वारा बस्तर जिले में कोसारटेडा मध्यम सिंचाई परियोजना सहित बेदारमुंडा एवं टिकरालोहंगा लघु सिंचाई तालाब, कुम्हरावण्ड, बनियागांव एवं भालूगुड़ा उदवहन सिंचाई योजना, मूली एवं कावारास व्यपवर्तन योजना और 46 एनीकट एवं स्टॉपडेम निर्मित किया गया है।

इन सिंचाई साधनों के निर्माण एवं सिंचित रकबा में वृद्धि के फलस्वरूप अब किसानों में नकदी फसलों की ओर रुझान बढ़ रहा है। जिससे बस्तर जिले के किसान आवश्यकता के अनुरूप खरीफ फसल में सिंचाई करते हैं और रबी सीजन में मक्का, उड़द-मूंग एवं साग-सब्जी की भरपूर पैदावार लेकर अतिरिक्त आमदनी अर्जित कर रहे हैं।

कोसाटेडा बनने से आमदनी में हुआ इजाफा

कोसाटेडा जलाशय से लाभन्वित होने वाले केशरपाल निवासी कृषक डमरूधर कश्यप और पीलूराम बघेल बताते है कि रबी में मक्का सहित साग-सब्जी की खेती कर आमदनी में इजाफा कर रहे हैं। कार्यपालन अभियंता टीडीपीपी जल संसाधन संभाग जगदलपुर से मिली जानकारी के अनुसार वर्तमान में जिले के अन्तर्गत 195 करोड़ 36 लाख रूपए लागत की 42 सिंचाई योजनाओं का निर्माण प्रगति पर है, इन योजनाओं के पूर्ण होने पर 6790 हेक्टेयर क्षेत्र में अतिरिक्त सिंचाई क्षमता निर्मित होगी। जिससे किसानों को खेती-किसानी को बढ़ावा देने में सहूलियत होगी।

(लेखक- कमल बघेल, उप संचालक, गोपाल कृष्ण शुक्ला, सहायक जनसंपर्क अधिकारी)

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत

संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

मित्रता और शत्रुता के भाव तो बादलों के समान क्षण-क्षण बदलते रहते हैं। - महाभारत

कृषि ऋण: राजनीति के कुचक्र में फंसे किसान !

महाराष्ट्र में पिछले महीने हजारों किसानों ने कर्जमाफी, न्यूनतम समर्थन मूल्य और अन्य मांगों को लेकर राष्ट्रीय राजमार्ग पर प्रदर्शन किया। करीब 30 किलोमीटर लंबे जाम के बाद यह आंदोलन मुम्बई उच्च न्यायालय के हस्तक्षेप पर स्थगित हुआ। बताया जाता है कि जून 2025 तक राज्य के किसानों पर करीब रु. 37,000 करोड़ का कृषि ऋण बकाया था। एन.डी.ए. ने विधानसभा चुनाव में किसानों का ऋण माफ करने का वादा किया था, लेकिन समय पर पालन न होने से किसान असंतोष में हैं।

इधर मध्यप्रदेश में भी करीब साढ़े चार लाख किसानों को ऋण नहीं चुका पाने पर डिफाल्टर घोषित कर दिया गया है, जिसके कारण उन्हें सहकारी समितियों से खाद नहीं मिल रही। रबी की बुआई के समय यह निर्णय किसानों के लिए गंभीर संकट बन सकता है।

दरअसल, किसानों की इस दशा के लिए राजनीतिक दल काफी हद तक जिम्मेदार हैं। चुनावों के समय सभी दल कर्जमाफी और नकद हस्तांतरण जैसी घोषणाओं से मतदाताओं को लुभाते हैं, पर सत्ता में आने के बाद वादे निभाने में चूक जाते हैं। महाराष्ट्र का हालिया आंदोलन इसी प्रवृत्ति का परिणाम है।

कर्जमाफी की राजनीति ने किसानों में भी गलत प्रवृत्ति पैदा की है। अब वे यह मानकर चलने लगे हैं कि चुनावों के बाद ऋण माफ

हो जाएगा, इसलिए समय पर भुगतान की जरूरत नहीं। इस सोच ने सहकारी बैंकों की वित्तीय स्थिति को भी कमजोर किया है। परिणामस्वरूप सरकारों पर कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा है, और अंततः इसका असर आम जनता पर पड़ता है।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि जैसी योजनाओं से किसानों को कुछ राहत जरूर मिलती है, लेकिन बढ़ती लागत, खाद-बीज की महंगाई और अनियमित मौसम के सामने यह सहायता नगण्य है। किसान आज भी प्राकृतिक आपदाओं और बाजार की अस्थिरता के बीच जूझ रहा है।

तीन दशक पहले तक किसान ऋण समय पर चुका देते थे, पर जबसे राजनीतिक दलों ने कर्जमाफी को चुनावी हथियार बनाया है, तबसे भुगतान अनुशासन टूट गया है। यह प्रवृत्ति न केवल कृषि अर्थव्यवस्था को कमजोर कर रही है बल्कि किसानों को आत्मनिर्भर बनने से भी रोक रही है।

समस्या का समाधान चुनावी वादों में नहीं, बल्कि दीर्घकालिक नीतिगत सुधारों में है। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिले, न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम दाम पर बिक्री न हो, प्रसंस्करण उद्योग को प्रोत्साहन मिले और कृषि अधोसंरचना — पानी, बिजली, खाद, बीज जैसी मूलभूत सुविधाएं सुदृढ़ की जाएं।

राजनीतिक दलों को चाहिए कि वे मतदाताओं को केवल प्रलोभन न दें, बल्कि वादों को समयबद्ध तरीके से पूरा करें। किसान को राहत की नहीं, विश्वास और स्थिरता की जरूरत है। जब तक राजनीति कर्जमाफी की जगह उत्पादन और मूल्य सुधार को प्राथमिकता नहीं देगी, तब तक किसान इस कुचक्र में फंसा ही रहेगा।

खेतों में महिलाओं का अदृश्य श्रम और मान्यता की लड़ाई

• **निलेश देसाई**

भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को अक्सर 'अन्नदाता पुरुष किसान' के रूप में देखा जाता है। खेतों की तस्वीरों में हल चलाते या मंडी में सौदा करते पुरुष दिखते हैं, परंतु इस दृश्य के पीछे वह श्रम है जो दिखाई नहीं देता—महिलाओं का। वे खेत में बीज डालती हैं, पौध रोपती हैं, निराई-गुड़ाई करती हैं, फसल काटती हैं, मवेशियों की देखभाल करती हैं और घर की रसोई तक अनाज पहुंचाती हैं। फिर भी, न तो उन्हें किसान कहा जाता है, न नीति में वह स्थान मिलता है जिसकी वे अधिकारी हैं। भारत में कृषि जनगणना (2015-16) बताती है कि कुल कृषि श्रम का लगभग 73 प्रतिशत कार्य महिलाएं करती हैं, लेकिन ज़मीन के स्वामित्व में उनका हिस्सा केवल 13 प्रतिशत है। यह असमानता केवल आंकड़ों में नहीं, बल्कि पहचान के संकट में है—वे किसान हैं, पर 'किसान' नहीं कहलातीं।

झाबुआ जैसे आदिवासी इलाकों में यह स्थिति और गहराई से महसूस होती है। संपर्क संस्था के लंबे अनुभव बताते हैं कि महिलाएं खेती की हर प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। वे ही बीजों का चयन और संरक्षण करती हैं, पौधों की रोपाई, निराई-गुड़ाई, जैविक खाद की तैयारी, फसल कटाई और पशुपालन तक हर काम संभालती हैं। इन कार्यों में उनका पारंपरिक ज्ञान, मौसमी समझ और बारीकी से जुड़ी मेहनत ही स्थानीय खेती को टिकाऊ बनाए रखती है। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों में महिलाएं खेत और घर के बीच पुल की तरह हैं—एक ओर वे उत्पादन में लगी हैं, दूसरी ओर घर की खाद्य सुरक्षा और पोषण की जिम्मेदारी भी उन्हीं पर है।

महिला खेत पाठशालाएं

संपर्क संस्था द्वारा संचालित कई गांवों में जब 'महिला खेत पाठशालाएं' शुरू की गईं, तो यह पहली बार सामने आया कि महिलाएं कितनी गहरी कृषि समझ रखती हैं। मिट्टी परीक्षण, देसी बीजों की पहचान, गोमूत्र और नीम से जैविक घोल तैयार करने की विधियां—ये सब वे सहज रूप से जानती थीं। परंतु

जब प्रशिक्षण या योजना की बात आती थी, तो सरकारी अभिलेखों में किसान के रूप में केवल पुरुष का नाम दर्ज होता था। परिणामस्वरूप महिलाएं कृषि ऋण, फसल बीमा या किसान क्रेडिट कार्ड जैसी सुविधाओं से वंचित रह जाती थीं।

झाबुआ में कई बार यह भी देखा गया कि जब सूखा या बेमौसमी वर्षा ने फसल को नुकसान पहुंचाया, तो महिलाओं ने ही वैकल्पिक आजीविका के उपाय खोजे—सब्जी बाड़ी, बकरी पालन, या देसी बीजों का आदान-प्रदान। संपर्क संस्था द्वारा संचालित 'पशु सखी' कार्यक्रम में दर्जनों महिलाएं प्रशिक्षित होकर न केवल अपने गांव में पशु स्वास्थ्य की सेवा दे रही हैं, बल्कि अतिरिक्त आमदनी भी अर्जित कर रही हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि जब महिलाओं को निर्णय का अधिकार और तकनीकी सहयोग मिलता है, तो वे न केवल उत्पादन बढ़ाती हैं बल्कि पूरे समुदाय की आर्थिक स्थिरता को भी मजबूत करती हैं।

देसी बीज बैंक

जलवायु परिवर्तन के दौर में यह भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। जब वर्षा चक्र अनिश्चित हो रहे हैं, जलस्रोत सूख रहे हैं, और मिट्टी की उर्वरता घट रही है, तब महिलाएं अपने अनुभव और पारंपरिक ज्ञान से अनुकूलन (adaptation) के नए रास्ते खोज रही हैं। झाबुआ के कुछ गांवों में महिलाओं ने सामूहिक रूप से देसी बीज बैंक बनाए हैं, स्थानीय फसलों की मिश्रित खेती शुरू की है और खेतों में जल संरक्षण के लिए छोटे-छोटे गड्ढे और बोरी बंधान तैयार किए हैं। यह कार्य संपर्क संस्था के मार्गदर्शन में हुआ है, पर असली नेतृत्व गांव की महिलाओं ने ही निभाया है। उनके अनुसार 'जल और बीज दोनों को बचाना ही आने वाले समय में खेती को बचाना है।'

खेतों में बीज से लेकर फसल तक का अधिकांश कार्य महिलाएं करती हैं, परंतु पहचान और नीति में वे अब भी हाशिए पर हैं। झाबुआ जैसे इलाकों में उनके श्रम, पारंपरिक ज्ञान और नेतृत्व ने यह सिद्ध किया है कि टिकाऊ कृषि का भविष्य महिला किसानों के हाथों में है।

कृषि नीति के स्तर पर देखें तो महिला किसानों की पहचान अभी भी अधूरी है। भूमि का स्वामित्व प्रायः पुरुषों के नाम पर होता है, जिससे महिलाएं 'सहायक' के रूप में देखी जाती हैं, 'निर्णयकर्ता' के रूप में नहीं। संपर्क के अनुभव बताते हैं कि जहां-जहां भूमि का संयुक्त स्वामित्व (joint title) पति-पत्नी के नाम पर हुआ, वहां महिलाओं की भागीदारी निर्णयों में स्पष्ट रूप से बढ़ी है। वे न केवल तकनीकी सलाह लेती हैं, बल्कि बाजार से सौदे भी खुद तय करने लगी हैं। यह आत्मविश्वास केवल अधिकार से आता है।

महिला किसानों को नीति, योजना और संसाधनों में बराबर की हिस्सेदारी हो

नीतियों में भी अब यह मान्यता दी जानी चाहिए कि किसान केवल वह नहीं जो हल चलाता है, बल्कि वह भी जो मिट्टी की नमी, बीज की पहचान, पशु की सेहत और घर की थाली—सबके बीच संतुलन बनाए रखता है। किसान एक प्रक्रिया है, और इस प्रक्रिया का आधा हिस्सा महिलाएं निभा रही हैं। यदि हम टिकाऊ और न्यायपूर्ण कृषि की दिशा में बढ़ना चाहते हैं, तो महिला किसानों को नीति, योजना और संसाधनों में बराबर की हिस्सेदारी देना अनिवार्य है।

झाबुआ के अनुभव यह भी बताते हैं कि जब महिलाएं संगठित होती हैं, तो केवल खेत ही नहीं, पूरा समुदाय बदलता है। महिला किसान समूहों ने न केवल अपनी खेती सुधारी, बल्कि गांवों में बच्चों की शिक्षा, पोषण और स्वच्छता के मुद्दों पर भी सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने सिद्ध किया कि 'कृषि' केवल उत्पादन नहीं, बल्कि जीवन जीने की सामूहिक प्रक्रिया है।

भारत के खेतों में हर उगती फसल, हर बोया बीज किसी न किसी महिला के हाथों से जुड़ा है। फिर भी जब नीतियां बनती हैं, तो उनका नाम सूचियों में नहीं होता। अब समय है कि यह अदृश्यता समाप्त हो। खेत की आधी आबादी को नीति में आधी हिस्सेदारी मिलनी चाहिए। जब महिलाएं किसान के रूप में पहचानी जाएंगी, तभी भारतीय कृषि सचमुच 'समानता, स्थायित्व और सम्मान' की दिशा में आगे बढ़ेगी।

(सप्रेस)

फॉस्फेट समृद्ध जैविक खाद (प्रोम) का उत्पादन एवं प्रयोग -2

कृषि उत्पादन में प्रोम खाद की उपयोगिता

● अनिल कुमार सिंह ● सिद्धार्थ नायक
● अक्षता तोमर ● ऋचा सिंह
● दिनेश कुमार सिंह ● रश्मि शुक्ला
email :aksjnkvv01@gmail.com

पिछले दो दशकों से, जैविक खेती में फॉस्फेट रिच आर्गेनिक मैन्योर (फॉस्फेट युक्त जैविक खाद-प्रोम) का उपयोग शामिल है, जो डीएपी, एमएपी, एसएसपी और नाइट्रोफॉस्फेट जैसे कृत्रिम रासायनिक उर्वरकों से प्रतिस्पर्धा कर रहा है। फॉस्फेट युक्त जैविक खाद उच्च-श्रेणी रॉक फॉस्फेट (32 प्रतिशत पी2ओ5, 2 प्रतिशत कम अथवा अधिक) को बहुत बारीक मात्रा में मिलाकर बनाई जाती है। फॉस्फेट रन्न अयस्क को वर्मीकम्पोस्ट या अवायवीय पाचक अपमार्जक (बायोगैस इकाइयों से निकलने वाली स्लरी) जैसे जैविक खाद की उपस्थिति में बैसिलस मेगाथेरियम, वैरफॉस्फेटिक (फॉस्फेट घुलनशील जीवाणु) और एजोटोबैक्टर (नाइट्रोजन स्थिरीकरण जीवाणु) के सूक्ष्मजीव संवर्धन का उपयोग करके उपयोगी फॉस्फेट में जैव-रूपांतरित करके फॉस्फेट युक्त जैव उर्वरक तैयार किया जा सकता है। यह एक प्रकार का उर्वरक है जिसका उपयोग सिंगल सुपरफॉस्फेट और डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) के विकल्प के रूप में किया जाता है। सभी पौधों को फास्फोरस की आवश्यकता होती है, लेकिन चूँकि मिट्टी में फास्फोरस का स्तर कम होता है, यह कृषि के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करता है। कृषि उत्पादन के लिए आदर्श व्यापक पादप वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए फास्फोरस को मिट्टी में खासकर कूंडों में प्रदान किया जाना चाहिए। इसकी घुलनशीलता मिट्टी के पीएच, आसपास के वातावरण और उसमें मौजूद जीवाणुओं से प्रभावित होती है।

प्रोम के प्रयोग के लाभ

● प्रोम धीमी गति से मुक्त होने वाली खाद है, जो सिंगल सुपर फॉस्फेट (एसएसपी), डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) या मोनोअमोनियम फॉस्फेट (एमएपी) जैसे सिंथेटिक उर्वरकों की तुलना में खेती में अधिक प्रभावी है।

● चूँकि कच्चा रॉक फॉस्फेट अयस्क जैव रासायनिक रूप से घुलनशील फॉस्फेट में परिवर्तित हो जाता है, इसलिए पौधों को सीधे इससे पोषण मिल सकता है।

● इसमें तीन प्रमुख पोषक तत्व होते हैं - अ). फॉस्फ़ेरस, ब). जीवांश कार्बन, स). नाइट्रोजन।

● प्राथमिक पोषक तत्वों के साथ-साथ तांबा, जस्ता और बोरॉन जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व प्रदान करता है।

● डीएपी के विकल्प के रूप में कार्य करता है और मिट्टी को लंबे समय तक पोषक तत्वों से भरपूर और पौष्टिक बनाता है।

● उपचारित क्षेत्र में बोई गई अन्य फसलों को भी उतनी ही कुशलता से फास्फोरस की आपूर्ति करता है जितनी कि पहली फसल को।

● उच्च उपज और बेहतर गुणवत्ता वाला उत्पादन प्राप्त होता है।

● मिट्टी की संरचना, सांध्रता जैसे मिट्टी के भौतिक गुणों में सुधार करता है और मिट्टी के कणों को समग्र सांध्रता में बाँधता है।

● अपघटन के दौरान कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित होती है और मृदा क्षारीयता को कम करने में मदद करती है।

● जल धारण क्षमता में सुधार करती है और अंत:स्पंदन को बढ़ाती है।

● बफरिंग एजेंट के रूप में कार्य करते हुए, ये उच्च अम्लता और क्षारीयता के कारण होने वाले मृदा क्षरण को कम करने में मदद करते हैं।

● प्रोटीन, तेल और अमीनो अम्लों के संश्लेषण में उपयोग किया जाता है।

● बायोगैस संयंत्रों से निकलने वाले अम्लीय अपशिष्ट ठोस पदार्थों का उपयोग करके इसका उत्पादन किया जा सकता है, जिससे पर्यावरण सुरक्षित रहता है और जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद मिलती है।

● जैविक खाद की उपस्थिति के कारण, निक्षालन और अपवाह रुक जाता है, मृदा स्वास्थ्य और उर्वरता में सुधार होता है।

● फॉस्फेट चट्टान से फॉस्फोरिक अम्ल या मौलिक फॉस्फोरस का उत्पादन पूरी तरह से नि:शुल्क है।

● प्रोम का उत्पादन काफी हद तक लागत प्रभावी है क्योंकि यह एक कम ऊर्जा प्रक्रिया है जिसमें उच्च तापमान या उच्च दबाव की आवश्यकता नहीं होती है, किसी रासायनिक उत्प्रेरक की आवश्यकता नहीं होती है, और इसमें किसी भी महंगे रसायन का उपयोग नहीं होता है।

● प्रोम वास्तव में लवणीय मृदाओं में फॉस्फेट उर्वरक के रूप में प्रभावी है जहाँ डीएपी पूरी तरह से विफल रहा है।

● मृदा सूक्ष्मजीवों की वृद्धि को बढ़ाता है जो मिट्टी में या प्राकृतिक रूप से मौजूद फास्फोरस के विघटन में सहायक होते हैं।

● प्रोम के उपयोग से किसानों के लिए उर्वरक की लागत कम होगी और फॉस्फेट खनिज के संरक्षण में भी मदद मिलेगी, जो उच्च अवशिष्ट प्रभाव के कारण एक गैर-नवीकरणीय संसाधन है।

● इस नए फॉस्फेट उर्वरक की कृषि-कुशलता बाजार में उपलब्ध जटिल फॉस्फेट उर्वरकों की तुलना में बेहतर है। प्रोम तटस्थ और क्षारीय मिट्टी के लिए उपयुक्त है, जो भारतीय किसानों के लिए एक वरदान साबित होगा।

कृषि में प्रोम

कृषि फसलों में प्रोम का प्रयोग सुगमता से किया जा सकता है क्योंकि यह देखा गया है कि पौधे इसे आसानी से अवशोषित कर लेते हैं। क्षारीय और अम्लीय, दोनों प्रकार की मिट्टी में, यह समान रूप से प्रभावी ढंग से कार्य करता है। कई क्षेत्रीय परीक्षणों से पता चला है कि फसल उत्पादन के मामले में प्रोम, एसएसपी, डीएपी या एमएपी जैसे सिंथेटिक उर्वरकों के बराबर (या अक्सर उनसे बेहतर) प्रदर्शन करता है। नीचे तालिका में सोयाबीन और मूंगफली जैसी फ़सलों, धान, गेहूं और जौ जैसे अनाज, गोभी और प्याज जैसी सब्जियों की उपज पर कुछ विशिष्ट निष्कर्ष दिए गए हैं। गेहूं और सोयाबीन के लिए एसएसपी (सिंगल सुपरफॉस्फेट) और धान, जौ, मूंगफली, गोभी और प्याज के लिए डीएपी (डायमोनियम फॉस्फेट) जैसे अक्सर उपयोग किए जाने वाले सिंथेटिक फॉस्फेट उर्वरकों की तुलना की गई है। प्रोम से प्राप्त सब्जियों, अनाजों और फसलों की उपज प्राय: मिट्टी में सिंथेटिक फॉस्फेटिक उर्वरकों (एसएसपी, डीएपी) के उपयोग से प्राप्त उपज से बेहतर और काफी तुलनीय होती है।

कच्चे फॉस्फेट रॉक और जैविक खाद, यथा वर्मीकम्पोस्ट या एनारोबिक डाइजेस्टर अपशिष्ट का उपयोग फॉस्फेटिक जैव उर्वरक (प्रोम) तथा एडीएस प्रोम बनाने के लिए सफलतापूर्वक किया जा सकता है। जैव उर्वरक की गुणवत्ता में सुधार के लिए, एजोटोबैक्टर और बैसिलस मेगाथेरियम जैसे सूक्ष्मजीवी संवर्धनों का भी उपयोग किया जा सकता है। इस फॉस्फेट युक्त जैविक खाद से मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में वृद्धि होती है, जिससे फसल उत्पादन में भी वृद्धि होती है। यह मिट्टी की विद्युत चालकता और मिट्टी के लाभकारी सूक्ष्मजीवों की सक्रियता को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त, मिट्टी का पीएच मान बनाए रखता है। यह ह्यूमस के निर्माण को प्रोत्साहित करता है। इसके अतिरिक्त, यह प्रभावी जड़ निर्माण को बढ़ावा देता है और बीज अंकुरण के प्रतिशत को बढ़ाता है। यह फसल की गंभीर रोगों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाता है। यह उत्पाद पर्यावरण अनुकूलित है अत: इसके प्रयोग से विभिन्न सिंथेटिक उर्वरकों में व्यय लागत में बचत के साथ-साथ बेहतर उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

फॉस्फेट युक्त जैविक खाद का संगठन

घटक	मात्रा
नमी प्रतिशत-भार के अनुसार	25.0 (अधिकतम)
कण आकार (4.0 मिमी छलनी से गुजरने पर)	90 प्रतिशत (न्यूनतम)
बल्क डेंसिटी (ग्राम/क्यूबिक सेमी)	1.0 से कम
कुल जीवांश कार्बन	7.9 प्रतिशत
कुल नाइट्रोजन भार के अनुसार	0.4 प्रतिशत (न्यूनतम)
कुल फॉस्फेट (पी2ओ5) प्रतिशत-भार के अनुसार	10.4 प्रतिशत (न्यूनतम)
कार्बन: नाइट्रोजन अनुपात	20:1 से कम
पीएच मान (1:5 घोल)	6.7 (अधिकतम)
विद्युत चालकता (डेसी सायमन प्रति मीटर)	8.2
भारी धातु सामग्री (मिलीग्राम/किग्रा)	
आर्सेनिक	10.00 (अधिकतम)
कैडमियम	5.00 (अधिकतम)
क्रोमियम	50.00 (अधिकतम)
कॉपर	300.00 (अधिकतम)
पारा (मरकरी)	0.15 (अधिकतम)
निकेल	50.00 (अधिकतम)
सीसा (लेड)	100.00 (अधिकतम)
जस्ता	1000.00 (अधिकतम)

नोट: इस फॉस्फेट युक्त जैविक खाद का उपयोग सभी अनाज, दलहनी, तिलहनी फसलों, सब्जियों, फलों और फूलों की फसलों में किया जा सकता है।

विभिन्न फसलों में प्रोम की संस्तुत मात्रा

फसल	मात्रा प्रति एकड़ (बुवाई के समय)	प्रति एकड़ (खड़ी फसल)
सोयाबीन	100 किग्रा.	-
आलू	100 किग्रा.	-
प्याज	100 किग्रा.	-
लहसुन	100 किग्रा.	-
गेहूँ	100 किग्रा.	-
चना	100 किग्रा.	-
हरी मिर्च	100 किग्रा.	100 किग्रा.
टमाटर	100 किग्रा.	100 किग्रा.
कपास	100 किग्रा.	100 किग्रा.
सब्जियाँ	100 किग्रा.	100 किग्रा.
फलों के बगीचे	100 किग्रा.	500 ग्राम/पौधा, हर 3 माह में

सिंथेटिक फॉस्फेटिक उर्वरक के साथ प्रोम का तुलनात्मक अध्ययन

फसल	उपज (क्विंटल/हेक्टेयर)				
	एसएसपी	डीएपी	प्रोम	एडीएस से तैयार प्रोम	वर्मीकम्पोस्ट से तैयार प्रोम
गेहूँ	28.9	-	29.5	29.09	28.8
सोयाबीन	10.37	-	11.69	11.55	11.0
मूंगफली	-	30.29	31.08	31.33	30.67
धान	30	39.1	43.85	43.75	42.5
जौ	-	56.23	69.69	70.2	67.25
गोभी	-	116.65	136.1	134.37	136.25
प्याज	-	165.19	167.16	166.66	164.55

स्रोत: खटीक एवं सहयोगी, एग्री आर्टिकल्स (2022)

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

हरी पत्तेदार सब्जियां उगाएं

भूमि– हरी पत्तेदार सब्जियों की खेती सभी प्रकार की भूमि में आसानी से की जा सकती है किन्तु बलुई दोमट मिट्टी जिसका पी.एच. मान 6-7 एवं जल निकास की उचित व्यवस्था हो इनकी खेती के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है।

उन्नत किस्में– पालक –पूसा भारती, आलग्रीन, पूसा ज्योति, पूसा हरित, जोबनेर-ग्रीन, एच. एस. 23।

मैथी– हिसार सोनाली, मुक्ता, पूसा अर्ली बंच-, आरएमटी-1, कसूरी।

लालसाग– पूसा लाल चौलाई, पूसा कीर्ति, पूसा किरण।

सलाद पत्ता: ग्रेट लेक, चाईनीज येलो ।

खाद व उर्वरक– बुवाई से पूर्व 100 क्विंटल अच्छी व सड़ी हुई गोबर खाद, 100 किलो ग्राम नत्रजन, 100 कि. ग्रा. फास्फोरस तथा 40 कि. ग्रा. पोटाश/हे. की दर से भूमि में मिलाकर बुवाई करें। प्रत्येक कटाई के बाद 25 कि. ग्रा. नत्रजन/हे. की दर से छिटक कर दें। इससे अधिक उपज प्राप्त होती है।

बुआई विधि – बीज बुवाई के लिए सर्वप्रथम क्यारियों में खाद डालकर अच्छी तरह से मिला दें और भुरभुरी कर लें। यदि नमी न हो तो बुआई के पहले क्यारियों में पलेवा या सिंचाई कर पर्याप्त नमी बना लें। तत्पश्चात बीजों की बुवाई करें । बीज 10-15 सेमी. की दूरी पर बनी लाइनों में बोयें। आवश्यकता से अधिक पौधों को निकाल दें। पत्तियों की कटाई करते समय यह ध्यान रखें कि कटाई जमीन की सतह से 3-5 सेमी. ऊपर से ही करें।

बुआई–

फसल	कतार से कतार की दूरी	बीज से बीज की दूरी
पालक	20 सेमी.	3-4 सेमी.
मैथी	20-25 सेमी.	3-4 सेमी.
चौलाई (छोटी)	20-25 सेमी.	4-5 सेमी.
चौलाई (बड़ी)	30-35 सेमी.	4-5 सेमी.

खरपतवार नियंत्रण– क्यारियों से खरपतवार निकालकर क्यारी सदैव साफ-सुथरी रखनी चाहिए ताकि पौधों के बढ़ने में कोई असुविधा न हो। यदि आवश्यकता पड़े तो समय-समय पर हल्की निंदाई - गुड़ाई भी करते रहें। इनसे पत्तियों की पैदावार - गुणवत्ता युक्त और अधिक प्राप्त होती है तथा कीड़ों का प्रकोप भी कम होता है।

सिंचाई– सब्जियों की किस्म, मिट्टी की दशा व मौसम को ध्यान में रखकर समय-समय पर सिंचाई करते रहना चाहिए। रोपण किये गये पौधों की अपेक्षा पुराने पौधों को अपेक्षाकृत कम सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। वर्षा ऋतु के अधिक पानी को बाहर निकालने की भी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। बीज की बुवाई सदैव नमीयुक्त स्थिति में करनी चाहिए। सूखे खेत में बीज की बुवाई करने या बीज की बुवाई के तुरंत बाद सिंचाई करने पर मिट्टी बैठ जाती है। और अंकुरण अच्छा नहीं होता हैं।

कटाई – बुआई के 25-30 दिन बाद प्रथम कटाई करें, बाद में 15-20 दिन के अंतर पर कटाई करते रहें।

हरी पत्तेदार सब्जियों की बीज दर, बुवाई का उपयुक्त समय एवं कटाई

बीज दर/हे.	बुवाई समय	पत्तियों की कटाई (कि.ग्रा.)
पालक	25-30	सितम्बर-अक्टूबर
विलायती पालक	15-20	सितम्बर-अक्टूबर
मैथी (देशी)	20-25	सितम्बर-मध्य नवम्बर
मैथी (कसूरी)	10-15	सितम्बर-मध्य नवम्बर
चौलाई (छोटी)	2-2.5	फरवरी-मार्च
चौलाई (बड़ी)	5-7	जून-जुलाई व फरवरी-मार्च

उपज–

फसल	उपज क्विंटल/हे.	कटाई संख्या
पालक	100-150	4-8
मैथी	80-100	3-5
चौलाई	70-100	6-7

• डॉ. लवेश कुमार चौरसिया
• डॉ. अशोक कुमार वर्मा

जैविक कीटनाशक बनाने की विधि एवं व्याधि नियंत्रण

ब्रह्मास्त्र

ब्रह्मास्त्र बनाने हेतु आवश्यक सामग्री:

- 10 लीटर गोमूत्र
- 3 किलोग्राम नीम की पत्ती की चटनी
- 2 किलोग्राम करंज की पत्तों की चटनी
- 2 किलोग्राम सीताफल पत्ते की चटनी

- 2 किलोग्राम बेल के पत्ते
- 2 किलोग्राम अंडी के पत्ते की चटनी
- 2 किलोग्राम धतूरा के पत्ते की चटनी

बनाने की विधि: इन सभी सामग्री में से कोई भी पांच सामग्री के मिश्रण को गोमूत्र में मिट्टी के बर्तन पर डाल कर आग में उबाले जैसे चार उबले आ जाए तो आग से उतारकर 48 घंटे छाए में ठंडा होने दें। इसके बाद कपड़े से छानकर भंडारण करे।

अवधि प्रयोग: ब्रह्मास्त्र का प्रयोग छः माह तक कर सकते हैं।

सावधानियां: भंडारण मिट्टी के बर्तन में करें गोमूत्र धातु के बर्तन में न रखें।

छिड़काव: एक एकड़ हेतु 100 लीटर पानी में 3 से 4 लीटर ब्रह्मास्त्र मिला कर छिड़काव करें।

अग्नी अस्त्र

(तना कीट फलों में होने वाली सूंडी एवं इल्लियों के लिए)

बनाने हेतु आवश्यक सामग्री:

- 20 लीटर गोमूत्र
- 5 किलोग्राम नीम के पत्ते की चटनी
- आधा किलोग्राम तम्बाकू का पाउडर
- आधा किलोग्राम हरी तीखी मिर्च
- 500 ग्राम देशी लहसुन की चटनी

बनाने की विधि: उपयुक्त ऊपर लिखी हुई सामग्री को एक मिट्टी के बर्तन में डालें और आग से चार बार उबाल आने दें। फिर 48 घंटे छाए में रखें। 48 घंटे में चार बार डंडे से चलाएं।

अवधि प्रयोग: अग्नी अस्त्र का प्रयोग केवल

तीन माह तक प्रयोग कर सकते हैं।

सावधानियां: मिट्टी के बर्तन पर ही सामग्री को उबल आने दे।

छिड़काव: 5 ली. अग्नी अस्त्र को छानकर 200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे मशीन या नीम के लेवचा से छिड़काव करें।

गोमूत्र

गोमूत्र कांच की शीशी में भरकर धूप में रख सकते हैं जितना पुराना गोमूत्र होगा उतना अधिक सरदारी असरकारी होगा 12 से 15 मिली लिटर गोमूत्र प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे पंप से फसलों में

बुवाई के 15 दिन बाद प्रत्येक 10 दिवस में छिड़काव करने से फसलों में रोग एवं कीड़ों में प्रतिरोधी क्षमता विकसित होती जिससे प्रकोप की संभावना कम रहती है

नीम के उत्पाद

नीम भारतीय मूल का पौधा है जिसे समूल की वेद के रूप में मान्यता प्राप्त है इससे मनुष्य के लिए उपयोगी ओषधिया तैयार की जाती है तथा इसके उत्पाद फसल संरक्षण के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

नीम पत्ती का घोल : नीम की 10 से 12 किलो पत्तियां 200 लीटर पानी में 4 दिन तक भिगोये पानी हरा पीला होने पर इसे छानकर एक एकड़ फसल पर छिड़काव करने से इल्ली की रोकथाम होती है इस ओषधि की तीव्रता बढ़ाने हेतु

बेशरम, धतूरा, तंबाकू आदि के पत्तों को मिलाकर काढ़ा बनाने से ओषधि की तीव्रता बड़ जाती है ओर यह दवा कई प्रकार के कीड़ो को नष्ट करने में उपयोगी सिद्ध है। नीम की निंबोली 2 किलो लेकर महीन पीस लें इसमें 2 लीटर ताजा गोमूत्र मिला लें इसमें 10 किलो छाछ मिलाकर 4 दिन रखें और 200 लीटर पानी में मिलाकर खेतों में फसल पर छिड़कें।

दीमक नियंत्रण के देशी उपाय

मक्का के भुट्टे से दाना निकलने के बाद, जो गिंडियां बचती हैं, उन्हें एक मिट्टी के घड़े में इकट्ठा करके घड़े को खेत में इस प्रकार गाढ़ें कि घड़े का मुँह जमीन से कुछ बाहर निकला हो। घड़े के ऊपर कपड़ा बांध दें तथा उसमें पानी भर दें। कुछ दिनों में ही आप देखेंगें कि घड़े में दीमक भर गई है। इसके उपरांत घड़े को बाहर निकालकर गरम कर लें ताकि दीमक समाप्त हो जाये। इस प्रकार के घड़े को खेत में 100-100 मीटर की दूरी पर गड़ाएं तथा करीब 5 बार गिंडियां बदलकर यह क्रिया दोहराएं। खेत में दीमक समाप्त हो जायेगी।

सुपारी के आकार की हींग एक कपड़े में लपेटकर तथा पत्थर में बांधकर खेत की ओर बहने वाले पानी की नाली में रख दें। उससे दीमक तथा उगरा रोग नष्ट हो जायेगा।

मछली-सह-बतख पालन : किसानों के लिए आय का उत्तम स्रोत

• नितेश कुमार यादव • डॉ. एस. के. शर्मा
• रोहिताश यादव
केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई

एकीकृत मछली-सह-बतख पालन के लाभ

• तालाबों के पानी की सतह को बतख पालन द्वारा पूर्ण उपयोग में लाया जा सकता है।

• मछली पालन के तालाब बतख के लिए एक उत्कृष्ट वातावरण प्रदान करते हैं जो उन्हें परजीवियों के संक्रमण से बचाता है।

• बतख मछली पालन तालाब में उपस्थित कीड़े-मकोड़े का सेवन करते हैं और मछली की अंगुलिकाओं को बढ़ने में मदद करते हैं।

• मछली के तालाबों में बतख पालने से बतख आहार में प्रोटीन की मांग 2-3 प्रतिशत तक कम हो जाती है।

• प्राकृतिक खाद्य जीवों के उपज को बढ़ाने के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने वाले पानी में बतख की मल संबंधी पदार्थ सीधे पानी में चली जाती हैं।

• बतख आहार (लगभग 20-30 ग्राम बतख) का दैनिक अपशिष्ट मछली के भोजन के रूप में तालाबों में या खाद के रूप में कार्य करता है, जिसके परिणामस्वरूप मछली की उपज अधिक होती है।

• आहार की खोज में बतखों के तालाब मे तैरने की क्रिया से मिट्टी के पोषण तत्व फैल जाते हैं और पानी में प्लवक उत्पादन को बढ़ावा देते हैं।

• बतख तालाब में तैरने, खेलने और पीछा करने के साथ बायो एरेटर का काम करती हैं। तालाब की सतह के लिए यह वातन की सुविधा प्रदान करते है।

• बतख की आहार दक्षता और शरीर के वजन में वृद्धि होती है और मछलियों द्वारा बिखरे हुए फीड का उपयोग किया जा सकता है।

• मछली पालन तालाबों के स्वच्छ वातावरण के कारण बतखों का जीवन दर तक 3.5 प्रतिशत तक बढ़ जाता है।

• बतख की मल संबंधी और प्रत्येक बतख का बचा हुआ चारा मछली का उत्पादन 37.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक बढ़ा सकता है।

• बतख जलीय पौधों के अनावश्यक बढ़वार को रोकते हैं।

• बतखों के लिए कोई अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता नहीं होती है।

• यह कम निवेश के माध्यम से उच्च लाभ सुनिश्चित करता है।

बतखों का चयन

एक हेक्टेयर मछली पालन तालाब की पर्याप्त खाद के लिए आवश्यक बतखों की संख्या भी एक विचार का विषय है, पालन के लिये उपयोग में लिये जाने वाले बतख के प्रकार को देखभाल के साथ चुना जाना चाहिए क्योंकि सभी पालतू नस्लें उत्पादक नहीं हैं

भारतीय बतख की महत्वपूर्ण नस्लें

• सिलहट मेटे

• नागेश्वरी

• बतख की हायब्रिड नस्ल, भारतीय धावक, तथा विदेशी नस्ल खाकी कैंपबेल उपयुक्त हैं।

• मछली पालन के साथ एक हेक्टेयर जल क्षेत्र के लिए 200-300 बतख पर्याप्त मात्रा में खाद का उत्पादन करने के लिए सक्षम हैं।

• 2-4 महीने पुरानी डकलिंग को महामारी के खिलाफ सुरक्षा के रूप में आवश्यक रोग निरोधी दवाएं प्रदान करने के बाद तालाब पर रखा जाता है।

• 200-300 बतख/ हेक्टेयर का संचयन घनत्व 10,000-15,000 किग्रा खाद देता है और हर साल एक हेक्टेयर के तालाब में पुनर्नवीनीकरण किया जाता है। बतख की खाद में शुष्क पदार्थ के आधार पर 81प्रतिशत नमी, 0.91 प्रतिशत नाइट्रोजन और 0.38 प्रतिशत फास्फेट होते हैं।

• बतख को सुबह 9 से 5 बजे तक तालाब की सतह पर रहने दिया जाता है, ताकि वे पूरे तालाब में स्वचालित रूप से अपनी मल को वितरित कर सके।

भोजन

खुले पानी में बतख तालाब से प्राकृतिक भोजन प्राप्त करने में सक्षम हैं, लेकिन यह उनके उचित वृद्धि के लिए पर्याप्त नहीं है वजन के 1:2 अनुपात में किसी भी मानक संतुलित पोल्ट्री फीड और राइस ब्रान का मिश्रण 100 ग्राम/पक्षी/दिन की दर से पूरक आहार के रूप में बतख को खिलाया जा सकता है आहार को दिन में दो बार (पहला सुबह और दूसरा शाम) दिया जाता है, आहार को या तो तालाब तटबंध पर या तालाब में पानी की सतह पर फैला दिया जाता है।

मछली संचयन

मछली-सह-बतख पालन प्रणाली में मछली संचयन की दर से 6000 अन्गुलिकाएं प्रति हेक्टेयर रखी जाती है विभिन्न प्रजातियों का अनुपात 40 प्रतिशत सतह पर रहने वाली मछलियां, 20 प्रतिशत पानी के बीच में रहने वाली (कॉलम फीडर) 30 प्रतिशत पेंदे में रहने वाली मछलियां तथा 10 से 20 प्रतिशत जलीय खरपतवार खाने वाली मछलियों को रखा जाता है।

• केवल भारतीय प्रमुख कार्पों की मिश्रित पालन में 40 प्रतिशत सतह, 30 प्रतिशत स्तंभ (कॉलम फ़ीडर) और 30 प्रतिशत पेंदे में रहने वाली मछली की प्रजातियों के अनुपात के साथ लिया जा सकता है।

• मछली की अंगुलिकाओं का संचयन जून-सितंबर महीने में करते हैं तथा 12 महीने तक मछली पालन किया जाता है

• भारत के उत्तरी और उत्तर - पश्चिमी राज्यों में, तालाबों को मार्च के महीने मछली का संचयन किया जाना चाहिए और सर्दी के कारण अक्टूबर-नवंबर के महीने में निकाल लिया जाना चाहिए, जो मछलियों के विकास को प्रभावित करते हैं।

• भारत के दक्षिण, तटीय और उत्तर-पूर्वी राज्यों में, जहां सर्दियों का मौसम कम होता है, तालाबों को जून-सितंबर महीनों में स्टॉक किया जाना चाहिए और 12 महीने तक मछली को पालने के बाद निकाल लिया जाना चाहिए।

बतख के अंडों का उत्पादन

बतख छह माह की आयु में अंडे देना चालू कर देती है तथा लगातार 2 से 3 साल तक अंडों का उत्पादन लिया जा सकता है जो बतख की प्रजाति, पोषण तथा प्रकृतिक वातावरण पर निर्भर करता है बतख रात्रि के समय अंडे देते हैं इसलिए बतख के तालाब में रहने के समय अंडे देने की संभावना नहीं होती है।

मछली पालन के साथ किसी भी पशुपालन को सम्मिलित किया जा सकता है जिससे कम खर्चे में अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है, सामान्यतया मछली पालन के साथ मुर्गी, सूअर, खरगोश तथा बतख पालन काफी प्रचलित है तथा इनसे उत्पन्न खाद का प्रयोग सीधे मछली पालन में आहार के रूप में किया जाता है मछली पालन में सबसे ज्यादा खर्चा भोजन पर होता है जो कि कुल लागत का 60 प्रतिशत तक होता है अतः समन्वित मछली पालन से पशुपालन के द्वारा उत्पन्न खाद का प्रयोग करके मछली के भोजन के खर्च को कम किया जा सकता है तथा कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है मछली पालन के साथ बतख पालन में दोनों के पालन में लाभ होता है।

कोई पशु हीट स्ट्रेस में हैं इसे कैसे पहचानेंगे

• डॉ. संजीव कुमार वर्मा

जैसे ही पशु हीट स्ट्रेस में आएगा तो वह हांफने लगेगा। उसकी जीभ बाहर आ जाएगी। सांसें तेज चलने लगेंगी। गाय सामान्यतः एक मिनट में 15 से 30 बार सांस लेती है। गाय में अगर सांस लेने की रफ्तार एक मिनट में 50 से अधिक हो तो हम कहेंगे कि वह हीट स्ट्रेस का शिकार हो गई है।

गर्मी के इस मौसम में पशुओं का खान पान कैसा हो ताकि वह हीट स्ट्रेस से बचे रहे?

गर्मी के मौसम में पशु चारा खाना कम कर देते हैं जिसके कारण जितना चारा दाना वह खाते हैं उससे उनकी ऊर्जा, प्रोटीन और विटामिन मिनरल्स की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है। इसलिए गर्मी के मौसम में पशुओं के खान-पान का विशेष ध्यान रखना होता है।

• गर्मी के मौसम में पानी सबसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व है। इसलिए इस मौसम में पशुओं को भरपूर मात्रा में साफ और शीतल जल पिलाएं। धूप में रखा हुआ पानी कदापि ना दें।

• गर्मी के मौसम में भूसे की मात्रा कम कर दें और रातिब मिश्रण की मात्रा बढ़ा दें।

• इस समय कोशिश करें कि पशु को जो भी हरा चारा दिया जाए वह मुलायम हो।

• इस मौसम में चूंकि पशु कम चारा खायेगा इसलिए पर्याप्त ऊर्जा और प्रोटीन की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए उसके रातिब मिश्रण में ऊर्जा और प्रोटीन की मात्रा बढा दें। इसके लिए कोई भी अनाज जैसे गेहूं, चावल, ज्वार, बाजरा 40 किलो; चोकर या चूरी 37 किलो और कोई भी खली 20 किलो लेकर उसमें 1 किलो सादा नमक और 2 किलो विटामिन मिनरल मिक्सचर मिला लें। इस प्रकार बने रातिब मिश्रण में ऊर्जा और प्रोटीन की मात्रा अधिक होगी।

• ऊर्जा की आपूर्ति बढ़ाने के लिए पशुओं को प्रतिदिन 100 ग्राम तक सरसों का तेल भी दिया जा सकता है।

• इस समय पशु की इलेक्ट्रोलाइट्स की आवश्यकता बढ़ जाती है इसलिए पशुओं को विरबेक कम्पनी का प्रोब्लेण्ड पावडर 50 से 100 ग्राम प्रतिदिन दिया जा सकता है। इसे देने से इलेक्ट्रोलाईट्स बैलेंस बना रहेगा।

• इसके अलावा पशुओं को चारा दाना सुबह और शाम को ठंडक के समय ही दें।

• पशुशाला में गर्मी से बचाव के पर्याप्त इंतजाम करें जैसे फर्राटा पंखे लगा दें। हो सके तो फोगर लगा दें। ये ना हो सके तो पशुओं के ऊपर पानी में भीगी टाट पट्टी ही डाल दें ताकि ठंडक बनी रहे।

• पशुओं को ज्यादा देर धूप में ना रखें।

• अगर कोई पशु हीट स्ट्रेस से ग्रसित दिखे तो तुरंत चिकित्सीय सहायता लें।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

समस्या -समाधान

समस्या– मैं अपने बगीचे में चीकू लगाना चाहता हूं चीकू कब लगाया जा सकता है, कौन सी जाति, कृपया विस्तार से बतायें?

– सुधीर वर्मा

समाधान– आप चीकू अपने बगीचे में

लगाना चाहते हैं इसे आप लगा सकते हैं चाही गई जानकारी पढ़ें और करें–

- लगाने का उपयुक्त समय जुलाई से सितम्बर माह है।
- जातियों में काली पत्ती, क्रिकेटबाल, बारहमासी, ओवल, कलकत्ता स्पेशल, पीली पत्ती, भूरी पत्ती तथा छतरी।
- मई माह में 1×1×1 मीटर के लम्बे, चौड़े तथा गहरे गड्ढे तैयार करें पौध से पौध की दूरी 8 मीटर हो।
- गड्ढों में 40 किलो गोबर की खाद, 2 किलो सिंगल सुपर फास्फेट भी मिलायें।
- अच्छी जाति के तैयार पौधे का रोपण समय से किया जाये।
- चीकू वर्षा आधारित तथा सिंचित दोनों दशा में लगाया जा सकता है सिंचाई करने पर उत्पादन अच्छा होता है।
- चीकू के पौधों के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें–

– उप संचालक उद्यानिकी
पचमढ़ी, जिला– नर्मदापुरम्

– प्रभारी शासकीय गार्डन, पचमढ़ी
जिला– नर्मदापुरम्

समस्या– मटर पर तापमान का प्रभाव 22 डिग्री सेल्सियस पर होता है यह तापमान हमारे यहां नवम्बर में आता है। मटियार दोमट भूमि में सिंचाई से पानी भर जाता है सुझाव दें?

– देवराज सिंह

समाधान – मटर पर तापक्रम के प्रभाव के विषय में आपका प्रश्न है जहां आप 22 डिग्री सेल्सियस पर चिंतित हैं जो आपके यहां नवम्बर तक आता है। मटर हो या कोई अन्य फसल केवल तापमान के कारण उत्पादन प्रभावित नहीं होता है। तापमान के साथ–साथ भूमि की नमी का भी उतना ही असर होता है। मटर एक ठंडी एवं शुष्क जलवायु की फसल है कड़ी सर्दी तथा पाले से फूल एवं फल दोनों प्रभावित हो सकते हैं। बुआई के समय भूमिगत तापमान यदि अधिक हो तो अंकुरण प्रभावित होता है तथा पौधे कमजोर होते हैं दूसरी और कम तापमान से भी अंकुरण प्रभावित होता है यदि भूमिगत तापमान 15 से 22 डिग्री सेल्सियस हो तो सबसे उत्तम अंकुरण होता है। बर्शते भूमि में नमी पर्याप्त हो तुलनात्मक अधिक तापमान में बढ़वार अच्छी होती है। मटर ही नहीं रबी की प्रत्येक फसलों को लम्बी अवधि के शीत दिवस होने से उत्पादन पर सकारात्मक असर होता है। आपकी भूमि मटियार दोमट है सिंचाई पर नियंत्रण करना जरुरी होगा अनियंत्रित सिंचाई से खेत में दल–दल की स्थिति बन जाती है जिससे पौधों की दैहिक क्रिया पर असर होता है बढ़वार गति मंद पड़ जाती है सिंचाई की क्यारी पद्धति या स्प्रिंकलर से सिंचाई करना अधिक अच्छा रहेगा। मटर बुवाई का उत्तम समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर माना गया है आप नवम्बर में लगाये पानी की व्यवस्था तो आपके पास उपलब्ध ही है।

समस्या– हमें जानकारी देने की कृपा करें कि गरकिन की फसल हमारे यहां हो सकती है या नहीं रायपुर के आसपास अधिक हो रही है लगाने का उपयुक्त समय क्या हैं?

– नारायण पवार

समाधान– आपने गरकिन के विषय में जानकारी चाही है। गरकिन कद्दूवर्गीय फसल खीरा – ककड़ी के जैसे ही एक है जो खाने में स्वादिष्ट तथा खीरा जैसी है। पौष्टिक खीरा से करीब चौथाई छोटी–छोटी होती है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र में स्थानीय तौर पर इसे लगाया जाता है। रायपुर में ज्यादा प्रचलित है आपके क्षेत्र में इसे सफलता से लगाया जा सकता है। निकट भविष्य में कृषक जगत में इनके बारे में विस्तार से जानकारी का प्रकाशन प्रस्तावित है।

समस्या – क्या बथुआ की खेती भी की जा सकती है क्योंकि इसके औषधि गुणों के कारण उपयोगी हैं नई जाति हो तो बतायें?

– रघुकुल राठौर

समाधान– आपने बिल्कुल ठीक लिखा है।

गेहूं तथा अन्य रबी फसलों के साथ उगने वाला बथुआ में अनेकों औषधि गुण हैं इसमें विटामिन ए एवं सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है आंतों तथा कब्ज रोगों में बहुत लाभदायक होता है आप चाहें तो थोड़े क्षेत्र में बथुआ लगा सकते हैं इसका उपयोग सब्जी–रायता में भी होता है। बवासीर रोग में भी लाभकारी पाया गया है।

- सभी प्रकार की भूमि में पैदा किया जा सकता है। बालुई दोमट भूमि सबसे अच्छी होती है। • खेत की तैयारी अन्य रबी फसलों की तरह की जाये। • बुवाई सितम्बर के आखिरी सप्ताह से लेकर मार्च प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है। • एक से डेढ़ किलो बीज प्रति हेक्टर पर्याप्त होता है। बीज को गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई की जा सकती है। • कतार से कतार 30 सेमी।
- इसकी जाति पूसा बथुआ 1 इसकी पत्तियां बैंगनी हरी पत्तियाँ 10.5 सेमी तथा चौड़ाई 3 सेमी होती है। तना भी बैंगनी रंग का होता है पहली कटाई बुआई को 40–50 दिन बाद की जा सकती है। • यूरिया 50–60 किलो खड़ी फसल में 2–3 भागों में बांटकर टापड्रेसिंग करें।
- बीज आने के पहले कटाई बंद कर दें।

समस्या– मैं अंगूर लगाना चाहता हूं क्या हमारे क्षेत्र में पैदा किया जा सकता है। विधि भी लिखें? – रामाजी पाटीदार

समाधान– आज से दो–तीन दशक पहले

अंगूर की खेती केवल महाराष्ट्र तक ही सीमित थी परंतु खेती को लाभकारी बनाने के प्रयास में नगदी फसलों के विस्तार में गति आई और अंगूर जैसी फसल भी हमारे प्रदेश में सफलता से आपके यहां भी लगाई जा सकती है। आप निम्न तकनीकी अपनायें।

- पौध लगाने का उचित समय नवम्बर से जनवरी होता है। • जल्दी ही खेत में 60×60×60 मीटर के लम्बे, चौड़े तथा गहरे गड्ढे तैयार करा लें किस्मों के अनुरुप गड्ढ़ों की दूरी 3×3 मीटर से लेकर 7×3 मीटर तक रखी जा सकती है।
- तारों से इसकी बेल को चढ़ाने के लिये मंडप तैयार किया जाता है पड़ोस के जिले रतलाम में स्वयं जाकर इनकों देखें तथा प्रशिक्षण भी लें क्योंकि फलन हेतु बेलों को विशेष स्थिति में कांटा/छांटा जाता है।
- प्रत्येक गड्ढ़ों में 40 किलो गोबर की खाद, 1 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 500 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश भरें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान
कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम ____
ग्राम ____ पोस्ट ____ तह. ____
जिला ____ फोन/मोबा. ____
कुल राशि ____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या ____
संलग्न ड्राफ्ट नं. ____ मनी आर्डर रसीद क्र. ____ वी.पी. भेजें ☐

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

गुणों से भरपूर सुपारी पुदीना
प्राकृतिक ताजगी और औषधीय शक्ति

• डॉ. दीपक हरि रानडे
• डॉ. मनोज कुमार कुरील
• डॉ. स्मिता अग्रवाल

सुपारी पुदीना (स्पीयर मिंट Mentha spicata) अपने ताजगी और सुगंध के कारण सदियों से हमारे जीवन का हिस्सा रहा है। इसे भारतीय और विश्वभर के रसोईघर, आयुर्वेदिक दवाओं और हर्बल उपचारों में प्रमुखता से उपयोग किया जाता है। इसकी नुकीली, ताजगी से भरी पत्तियाँ न केवल स्वाद और खुशबू बढ़ाती हैं, बल्कि शरीर और मस्तिष्क के लिए अद्भुत लाभ भी प्रदान करती हैं। स्पीयर मिंट का नाम इसके पत्तियों के नुकीले आकार (spear-like) और तेज़ खुशबू से जुड़ा है। इसे ताजगी, शीतलता और स्वास्थ्य का प्रतीक भी माना जाता है। आज यह न सिर्फ खाद्य और पेय पदार्थों में, बल्कि सौंदर्य प्रसाधन, दंत-मंजन, तेल और इत्र उद्योग में भी अपनी जगह बना चुका है। यह पौधा कृषि महाविद्यालय, खंडवा में लगा हुआ है।

स्वाद और सुगंध में विशेष

स्पीयर मिंट की पत्तियों का स्वाद हल्का मीठा, ताजगी से भरा और मन को शीतल करने वाला होता है। इसका प्राकृतिक सुगंध मन और मस्तिष्क को ताजगी देती है। चाय, हर्बल शरबत, सलाद और चटनी में इसका उपयोग खाने का स्वाद ही नहीं बढ़ाता, बल्कि भोजन को पचाने में भी मदद करता है। ताजगी के अलावा, इसकी सुगंध मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है। तनाव और थकान के समय इसकी खुशबू से मस्तिष्क को ताजगी मिलती है, ध्यान केंद्रित करना आसान होता है और मानसिक थकान कम होती है।

औषधीय महत्व

सुपारी पुदीना सिर्फ स्वाद और सुगंध तक सीमित नहीं है। इसके पत्तों और तेल में कई औषधीय गुण मौजूद हैं, जो इसे आयुर्वेद और हर्बल उपचार में अनमोल बनाते हैं।

पाचन में सहायक

पुदीना पेट की गड़बड़ियों को दूर करता है। यह भूख बढ़ाने, अपच कम करने और गैस और ब्लोटिंग को नियंत्रित करने में मदद करता है। इसके ताजे पत्तों से बनी चाय या शरबत पेट को हल्का और आरामदायक महसूस कराता है।

सर्दी, खाँसी और श्वसन स्वास्थ्य

सुपारी पुदीना सर्दी और खाँसी में राहत देता है। इसमें प्राकृतिक ठंडक और ताजगी होती है, जो गले की जलन कम करती है और श्वसन मार्ग को आराम देती है। हर्बल चाय या पुदीना अर्क गले को शांत करता है और सर्दियों में शरीर को गर्म रखता है।

त्वचा और सौंदर्य में उपयोग

पुदीना का तेल और अर्क त्वचा पर लगाने से ताजगी और ठंडक मिलती है। यह मुहांसों और जलन को कम करता है, त्वचा को हाइड्रेट करता है और उसे स्वस्थ बनाता है। साबुन, क्रीम और फेस पैक में पुदीना का उपयोग त्वचा की चमक बढ़ाने और उसे जीवंत रखने के लिए किया जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य और ताजगी

स्पीयर मिंट मानसिक थकान और तनाव को कम करता है। इसकी ताजगी से भरी सुगंध मस्तिष्क को उत्तेजित करती है, एकाग्रता बढ़ाती है और मूड को बेहतर बनाती है। सुबह के समय पुदीना का सेवन या ताजे पत्तों की खुशबू मानसिक ताजगी के लिए लाभकारी होती है।

एंटीऑक्सीडेंट और डिटॉक्स गुण

सुपारी पुदीना में एंटीऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं, जो शरीर को हानिकारक मुक्त कणों से बचाते हैं। यह शरीर को डिटॉक्स करने, ऊर्जा बढ़ाने और इम्यून सिस्टम को मजबूत करने में मदद करता है।

संक्षेप में

स्पीयर मिंट हल्का, मीठा और सुगंधित होता है, जिससे यह रोजमर्रा के खाने, चाय और सौंदर्य उत्पादों में अधिक प्रिय है। पेपरमिंट (सामान्य पुदीना) में मेंथोल अधिक होने के कारण यह औषधीय उत्पादों और तेल उद्योग के लिए अधिक उपयोगी है।

खाद्य और औषधीय उपयोग

स्पीयर मिंट का उपयोग विविध तरीकों से किया जाता है।

ताजा पत्तियाँ : चाय, शरबत, सलाद, चटनी और डेसर्ट में ताजगी और स्वाद बढ़ाने के लिए।

सूखी पत्तियाँ: पाउडर या मसाले के रूप में इस्तेमाल।

तेल (मेंथोल युक्त) : साबुन, क्रीम, इत्र, दंत-मंजन और हर्बल तेल में।

तैयार उत्पाद: पुदीना पेस्ट, चाय, पुदीना बाम, कैंडल और हर्बल ड्रिंक।

स्पीयर मिंट की बहुपयोगिता इसे केवल रसोई तक सीमित नहीं रहने देती, बल्कि यह औषधीय और सौंदर्य उद्योग में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

जीवनशैली में महत्व

स्पीयर मिंट के सेवन से न केवल स्वास्थ्य लाभ होते हैं, बल्कि यह जीवनशैली में ताजगी और ऊर्जा भी जोड़ता है। सुबह-सुबह पुदीना वाली हर्बल चाय या शरबत लेने से दिनभर ताजगी बनी रहती है। थकान और तनाव के समय इसकी सुगंध मस्तिष्क को तरोताजा कर देती है। इसके अलावा, पुदीना की खुशबू और स्वाद मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है। यह ध्यान और मानसिक संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

सुपारी पुदीना के फायदे एक नजर में

- पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है
- सर्दी-खाँसी और श्वसन स्वास्थ्य में सहायक
- त्वचा को स्वस्थ, हाइड्रेट और चमकदार बनाता है
- मानसिक तनाव और थकान कम करता है
- एंटीऑक्सीडेंट और डिटॉक्स गुणों से भरपूर
- सौंदर्य प्रसाधन, तेल और हर्बल उत्पादों में बहुपयोगी
- स्वाद और सुगंध से भोजन और पेय पदार्थों में ताजगी

स्पीयर मिंट और सामान्य पुदीना में अंतर

स्पीयर मिंट (Mentha spicata) और सामान्य पुदीना (Mentha piperita या पेपरमिंट) दोनों ही लोकप्रिय हर्बल पौधे हैं, लेकिन इनके स्वाद, खुशबू और उपयोगिता में महत्वपूर्ण अंतर है।

विशेषता	स्पीयर मिंट (सुपारी पुदीना)	सामान्य पुदीना (पेपरमिंट)
सुगंध और स्वाद	हल्का मीठा, ताजगी से भरा, नर्म और सुगंधित	तीखा, तेज और मसलदार स्वाद, हल्का कड़वा
तेल में मेंथोल की मात्रा	कम मेंथोल (90.5-1%)	अधिक मेंथोल (91.5-2%)
पत्तियों का आकार	लंबी, नुकीली और सपाट	मोटी, गहरी हरी और अक्सर मरोड़दार
उपयोगिता	हर्बल चाय, सलाद, चटनी,सौंदर्य प्रसाधन, हल्के हर्बल उत्पाद	दंत-मंजन, इत्र, तेल, औषधीय उत्पाद और ठंडी हर्बल ड्रिंक
स्वास्थ्य लाभ	पाचन सुधार, ताजगी, त्वचा और मानसिक स्वास्थ्य	श्वसन स्वास्थ्य, सर्दी-खाँसी, ठंडक और दर्द निवारण
सुगंध का असर	हल्का और मधुर, मानसिक ताजगी के लिए बेहतर	तेज़ और तीखा, तनाव और सिरदर्द में सहायक

नाश्ते से बच्चों का प्रदर्शन अच्छा

पोषक आहार लेना जरूरी

नाश्ते में बच्चों को कुछ भी देना अक्लमंदी नहीं है। सिर्फ मिठाई या चिप्स जैसे खाद्य वस्तुओं से कोई फर्क नहीं पड़ता। इसकी बजाय पोषक तत्वों से युक्त भोजन दिया जाना चाहिए। शोध में ज्यादातर बच्चों में ऐसा ही पाया गया।

सीखने की क्षमता में सुधार

- स्कूल से पहले नाश्ते से पढ़ने-सीखने की क्षमता में दिखा गजब का सुधार।
- शोधकर्ताओं ने कहा, नाश्ता करने वाले बच्चों ने दोगुने अंक पाए।

सुबह का नाश्ता सेहत के लिए फायदेमंद तो है ही, लेकिन स्कूल जाने वाले बच्चों के लिये यह सोने पर सुहागा से कम नहीं। दरअसल, ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने कहा है कि स्कूल जाने से पहले नाश्ता करने वाले बच्चे पढ़ाई- लिखाई में ज्यादा बेहतर प्रदर्शन करते हैं। कार्डिफ यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने पाया कि खाली पेट पढ़ने-सीखने वाले बच्चों की तुलना में नाश्ता कर कक्षाओं में जाने वाले बच्चों ने परीक्षाओं और टेस्ट में दोगुने के करीब अंक पाए।

शोधकर्ताओं ने इस आधार पर कहा कि ब्रिटिश स्कूलों में सरकार की ओर से मिड डे मील जैसी योजना बंद करने का असर

बच्चों को सीखने की क्षमता पर पड़ सकता है। इस तरह स्कूल बजट में कमी बच्चों के अकादमिक स्तर पर उलटा असर डाल सकती है। शोधकर्ता हन्ना लिटिलकॉट ने कहा कि नाश्ता करके जाने से स्कूल में बच्चों की एकाग्रता बेहतर रहती है।

शोधकर्ताओं ने पाया कि 11 बजे के आसपास जब छात्रों का इम्तहान लिया गया तो वे बिना नाश्ता करके परीक्षा देने वालों की तुलना में दोगुना अंक पाए। उन्होंने कहा कि फल, सब्जियों के साथ मिठाई व चॉकलेट जैसी खाद्य वस्तुओं का निश्चित तौर पर शैक्षिक स्तर पर सकारात्मक असर पड़ा। बच्चे कम बीमार पड़े, स्कूल में उनका मन भी लगा और क्लास में सीखी हुई बातों को लेकर उनकी याददाश्त भी बेहतर हुई। लंदन इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन में समाजशास्त्र के प्रोफेसर क्रिस बोनेल ने कहा कि अब ब्रिटेन के ज्यादातर स्कूल बच्चों को नाश्ते की पेशकश करते हैं। इससे बच्चों की सेहत के साथ शैक्षिक प्रदर्शन को भी बेहतर बनाने में मदद मिलती है।

पाक्षिक पंचांग

3 से 16 नवम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
कार्तिक शुक्ल 13 से आगहन कृष्ण 12 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
3	नवम्बर	सोम	कार्तिक शुक्ल	13 प्रदोष व्रत, पंचक
4	नवम्बर	मंगल	----------	14 बैकुंठ चतुर्दशी पंचक 11.20 दिन तक
5	नवम्बर	बुध	----------	15 स्ना.दा. व्रत पूर्णिमा
6	नवम्बर	गुरु	अगहन कृष्ण	1
7	नवम्बर	शुक्र	----------	2
8	नवम्बर	शनि	----------	3 गणेश चतुर्थी
9	नवम्बर	रवि	----------	4
10	नवम्बर	सोम	----------	5/6
11	नवम्बर	मंगल	----------	7
12	नवम्बर	बुध	----------	8 काल भैरवाष्टमी
13	नवम्बर	गुरु	----------	9
14	नवम्बर	शुक्र	----------	10
15	नवम्बर	शनि	----------	11 उत्पन्ना एकादशी
16	नवम्बर	रवि	----------	12

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

योजना से किसानों को मिलेगी सिंचाई सुविधा

कुनकुरी क्षेत्र के किसानों को मिली सौगात

रायपुर। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में प्रदेश सरकार ने किसानों के हित में एक और महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। जशपुर जिले के विकासखंड कुनकुरी की ईब व्यप्रवर्तन योजना के मरम्मत एवं जीर्णोद्धार कार्य के लिए राज्य शासन ने 37 करोड़ 09 लाख 63 हजार रुपए की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की है।

इस निर्णय से कुनकुरी क्षेत्र के हजारों किसानों को सीधा लाभ मिलेगा। योजना पूर्ण होने पर 3,323 हेक्टेयर के विरुद्ध 1,453 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होगी, जिससे फसलों की उत्पादकता बढ़ेगी और किसानों की आय में वृद्धि होगी।

कृषि विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इस योजना के जीर्णोद्धार से कृषि योग्य भूमि की सिंचाई क्षमता में व्यापक सुधार होगा। लंबे समय से किसान इस योजना की मरम्मत की मांग कर रहे थे, जिसे मुख्यमंत्री श्री साय ने पूरा कर दिया है।

कुनकुरी क्षेत्र के किसानों ने इस निर्णय के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ईब व्यप्रवर्तन योजना के पुनर्जीवन से अब उनकी खेती और भी सशक्त होगी तथा उन्हें सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

बेमेतरा जिले के किसानों ने लिया ग्रीष्मकालीन धान नहीं लेने का संकल्प

रायपुर। जिला प्रशासन और कृषि विभाग बेमेतरा द्वारा जिले के किसानों को ग्रीष्मकालीन फसल धान न लेकर इसके स्थान पर मूंग, उड़द, चना, मक्का, सूरजमुखी, सब्जियाँ, तरबूज, खरबूजा जैसी फसलें लेने की अपील सार्थक साबित हो रही है। यहां के किसानों ने जिला प्रशासन की अपील पर ग्रीष्मकालीन धान न लेने का निर्णय लिया हैं। जिले के किसानों द्वारा कम पानी में उपजने वाली वैकल्पिक फसलें अपनाने का निर्णय जल संरक्षण और कृषि की दीर्घकालिक स्थिरता की दिशा में एक अभिनव एवं सराहनीय पहल है। बेमेतरा का यह कदम न केवल जल संरक्षण बल्कि सतत कृषि विकास की दिशा में भी एक प्रेरणादायक उदाहरण बन रहा है।

जिला प्रशासन द्वारा किसानों से अपील करते हुए कहा गया है कि ग्रीष्मकालीन धान की बुवाई न करें। इसके स्थान पर मूंग, उड़द, चना, मक्का, सूरजमुखी, सब्जियाँ, तरबूज, खरबूजा जैसी फसलें लें। ये कम पानी में भी सफलतापूर्वक ली जा सकती हैं, जो अधिक लाभदायक हैं। जल संरक्षण हेतु ड्रिप/स्प्रिंकलर सिंचाई, मल्चिंग और फसल चक्र अपनाएँ।

राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन योजना से किसान महावीर की आय हुई दोगुनी

रायपुर। महावीर पुषाम अब प्रगतिशील किसान के रूप में उभर कर आ रहे हैं। वे एक साधारण किसान हैं, जिन्होंने अपने कठिन परिश्रम, लगन और सरकारी योजनाओं के सही उपयोग से न सिर्फ अपनी खेती को लाभकारी बनाया, बल्कि अन्य किसानों को प्रेरित कर रहे हैं। महावीर पुषाम की मेहनत और विभागीय सहयोग से उनके खेतों में बड़ा बदलाव आया। उन्होंने बीज और खाद के संतुलित उपयोग पर ध्यान दिया। पहले जहाँ वे 2 एकड़ में तिल, 2 एकड़ में रामतिल और 1 एकड़ में मूंगफली उगाते थे, अब उन्होंने सही बीज, उन्नत खेती तकनीक और उचित खाद का प्रयोग किया। इस बदलाव से उत्पादन लागत में भी कमी आई, और कुल आय में वृद्धि हुई।

बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के विकासखण्ड रामचन्द्रपुर के ग्राम विमलापुर निवासी महावीर पुषाम कई वर्षों से खेती कर रहे हैं और लगभग पाँच एकड़ भूमि पर तिलहन और मूंगफली की फसल उगाते हैं। कृषि के आधुनिक तरीकों की जानकारी न होने के कारण लागत नियंत्रण और उत्पादन की गुणवत्ता पर भी प्रभाव पड़ता था और महावीर केवल 55 से 60 हजार रुपये की आय अर्जित कर पाते थे।

आय बढ़ी और आर्थिक स्थिति हुई मजबूत

महावीर अपने गांव और आसपास के किसानों से बात की और जानकारी जुटाई। उसी दौरान उन्हें कृषि विभाग की राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन योजना (एनएमईओ) के बारे में पता चला। कृषि विभाग से संपर्क करने के बाद उन्होंने योजना की विस्तार से जानकारी ली। विभाग ने उन्हें गुणवत्तायुक्त बीज, उन्नत कृषि तकनीकों और संतुलित खाद के उपयोग के बारे में मार्गदर्शन दिया। उनकी आमदनी पहले लगभग 55-60 हजार रुपये से बढ़कर करीब 1 लाख रुपये हो गई। इस सफलता ने न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया, साथ ही अन्य किसानों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बना दिया।

महावीर पुषाम का कहते हैं कि मैं कृषि विभाग की सभी योजनाओं का लाभ लेने के लिए इच्छुक हूं सरकारी योजनाओं की सही जानकारी मिले तो कोई भी किसान अपने जीवन को बेहतर बना सकता है।

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, हॉस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ◻ भोपाल ◻ जयपुर ◻ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).
नाम ....
....
ग्राम .... पो. ....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....
वि.ख. .... तह. ....
जिला .... पिन ◻◻◻◻◻◻ राज्य ....
शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....
ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....
ई-मेल ....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222
पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

भारत में मौसम-आधारित कृषि बीमा सब फसलों पर लागू हो

• शशिकांत त्रिवेदी, वरिष्ठ पत्रकार,
मो.: 9893355391

भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की आधी से अधिक आबादी का पोषण करता है, जलवायु परिवर्तन और बदलते मौसम के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। राष्ट्रीय इस तरह का बीमा वर्षा, तापमान या आर्द्रता जैसे पूर्व निर्धारित मौसम मापदंडों पर आधारित भुगतान प्रदान करता है। इसे पैरामीट्रिक बीमा भी कहते हैं। इसमें किसानों को नुकसान की भरपाई के लिए कुछ जल्दी मुआवजा मिलने की सम्भावना रहती है। पारंपरिक क्षतिपूर्ति-आधारित मॉडल से अलग, जहां नुकसान मूल्यांकन में 1-2 साल की देरी होती है, पैरामीट्रिक बीमा कुछ दिनों में मोबाइल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भुगतान कर सकता है, जैसा केन्या और फिलीपींस में देखा गया है।

देश में खरीफ क्षेत्र के 58 प्रतिशत में अतिरिक्त वर्षा

सन् 2025 में, भारत में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव स्पष्ट हैं। मौसम विभाग की रिपोर्ट के अनुसार, अक्टूबर में असामान्य वर्षा ने मध्य प्रदेश में 71 मिमी तक बारिश दर्ज की, जिससे बाढ़ और फसल क्षति हुई। पूरे देश में खरीफ क्षेत्र के 58 प्रतिशत में अतिरिक्त वर्षा दर्ज हुई, जिससे चावल, मक्का और सोयाबीन जैसी फसलों को नुकसान पहुंचा। अक्टूबर में औसत से अधिक बारिश ने कटाई के निकट फसलों को प्रभावित किया, जिससे 3.2 मिलियन हेक्टेयर भूमि प्रभावित हुई हैं। सन् 2024 के डेटा के आधार पर, 2025 में भी लगभग समान परिस्थितियां हैं। जलवायु परिवर्तन से औसत तापमान 1.5 डिग्री सेंटीग्रेड बढ़ने की संभावना है, जिससे प्रमुख फसलों में 10 प्रतिशत तक उत्पादन हानि हो सकती है। 2024-25 में, बदलते मौसम से 10,000 पशु हानि और लाखों किसानों को नुकसान हुआ।

किसानों की आय प्रभावित

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) के तहत 78.41 करोड़ आवेदनों को कवर किया गया, जिसमें रू. 1.83 लाख करोड़ क्लेम्स का भुगतान हुआ, लेकिन देरी एक बड़ी समस्या है। अध्ययनों से पता चलता है कि क्लेम सेटलमेंट में 3-14 महीने लगते हैं, जिससे किसानों की आय प्रभावित होती है।

खाद्य मुद्रास्फीति बढ़ रही

भारत में असामान्य मौसम—जैसे बंगाल की खाड़ी में गहरा अवदाब और अरब सागर में डिप्रेशन—फसल चक्र को बाधित कर रहा है। माराठवाड़ा जैसे सूखाग्रस्त क्षेत्रों में बाढ़ से लाखों हेक्टेयर फसलें नष्ट हो रही हैं, जिससे खाद्य मुद्रास्फीति बढ़ रही है। पैरामीट्रिक बीमा इस जोखिम को कम कर सकता है, लेकिन चुनौतियां हैं: अभी भारत में लगभग 30 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में ही मौसम स्टेशन हैं। ऐसी स्थिति में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) और डिजिटल साक्षरता अभियान आवश्यक हैं। सरकार नवाचार और प्रौद्योगिकी कोष (जिसे फिएट भी कहते हैं) से नवाचार को बढ़ावा दे रही है, जो आर्टिफिशिएल इंटेलीजेंस आधारित बीमा को और ठोस विकल्प बना सकता है।

824.77 करोड़ का एक अलग कोष

हाल ही में कुछ खबरें आई हैं कि नाबार्ड पैरामीट्रिक बीमा पर कुछ संस्थाओं से बातचीत कर रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स के इस्तेमाल से वास्तविक समय का डेटा, सेंसर और मौसम स्टेशन से की मदद से मौसम के कारण खेती में हुए नुकसान का वास्तविक आकलन किया जा सकता है। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने इस साल दो फसल बीमा योजनाओं - प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना को 2025-26 तक एक और वर्ष के लिए बढ़ा दिया और तकनीक के जरिये प्रमुख योजनाओं का लाभ किसानों को देने के लिए रू. 824.77 करोड़ का एक अलग कोष बनाया। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना को 15वें वित्त आयोग की अवधि के अनुरूप बनाने के लिए बढ़ा दिया गया है। इन पर सन् 2021-22 से 2025-26 तक रू. 69,515.71 करोड़ खर्च होना है। जबकि 2020-21 से 2024-25 के लिए यह खर्च रू. 66,550 करोड़ था ।

कुल मिलाकर, पैरामीट्रिक बीमा कृषि क्षेत्र को जलवायु अनुकूल बनाने का एक क्रांतिकारी कदम है, लेकिन बड़े पैमाने पर अपनाने के लिए नीतिगत समर्थन और किसान शिक्षा जरूरी है। 2025 में, चरम मौसम की बढ़ती घटनाएं इसकी तत्काल आवश्यकता रेखांकित करती हैं, अन्यथा कृषि उत्पादन में 5-10 प्रतिशत की गिरावट से खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।

महिंद्रा फार्म मशीनरी ने नया ग्राउंडनट थ्रेशर लॉन्च किया

मुंबई (कृषक जगत)। दुनिया की सबसे बड़ी ट्रैक्टर विनिर्माता और भारत के सबसे बड़े कृषि उपकरण निर्माताओं में से एक, महिंद्रा एंड महिंद्रा ने एक नया मूंगफली थ्रेशर लॉन्च किया है। उपयोगकर्ता के अनुकूल और किफायती डिज़ाइन वाले इस नए मूंगफली थ्रेशर को चलाना आसान है। ट्रैक्टर से चलने वाला यह नया थ्रेशर प्रेसिज़न (सटीक) थ्रेसिंग के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो मूंगफली को उनकी फलियों से ठीक से अलग करता है।

गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के मूंगफली किसानों के लिए उपयुक्त, महिंद्रा का यह नया मूंगफली थ्रेशर आकार में छोटा, लेकिन दक्ष और मज़बूत है। इसका एर्गोनॉमिक डिज़ाइन किसानों के रोज़मर्रा के काम आसानी से करने और मज़दूरों पर निर्भरता कम कर बचत करने में मदद करता है। मूंगफली की फसल की कटाई के लिए सुविधाजनक समय-सारिणी सुनिश्चित करता है, जिससे किसान अपनी सुविधा के अनुरूप कटाई और थ्रेशिंग कर सकते हैं। महिंद्रा का नया मूंगफली थ्रेशर अनाज की गुणवत्ता और नुकसान की वास्तविक समय पर निगरानी

की सुविधा प्रदान करता है, ताकि तत्काल हस्तक्षेप किया जा सके और बर्बादी तथा खेत में छूट जाने वाले अवशेष को कम किया जा सके। यह नया थ्रेशर जल्दी कटाई और देर से थ्रेशिंग की जोखिम को कम करने में मदद करता है।

महिंद्रा फार्म इक्विपमेंट बिजनेस की वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और बिज़नेस हेड (व्यापार प्रमुख) - फार्म मशीनरी एवं प्रिसिजन फार्मिंग, डॉ. अनुषा कोथंदरमन ने नए लॉन्च पर अपनी टिप्पणी में कहा, 'महिंद्रा को नया मूंगफली थ्रेशर लॉन्च करते हुए बेहद खुशी हो रही है। यह एक ऐसा उत्पाद है, जिसकी कल्पना मूंगफली किसानों के साथ मिलकर एक ऐसे मशीनीकरण समाधान के लिए की गई है जो समय पर कटाई के लिए सुविधाजनक है, और मूंगफली की फसल की मूल्य श्रृंखला में और वृद्धि करता है। 30 से ज्यादा थ्रेशरों की हमारी बढ़ती श्रृंखला के साथ, यह लॉन्च हमारे कृषि मशीनरी व्यवसाय के ज़रिये नवोन्मेष और कृषि सशक्तिकरण के हमारे निरंतर प्रयास को दर्शाता है। नया थ्रेशर गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश स्थित विशिष्ट महिंद्रा फार्म मशीनरी आउटलेट और चुनिंदा महिंद्रा ट्रैक्टर डीलरशिप पर खरीदने के लिए उपलब्ध है।'

25 वर्षों में छत्तीसगढ़ ने अपनी विशेष पहचान बनाई : श्री डेका

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित राज्योत्सव के दूसरे दिन राज्यपाल श्री रमेन डेका मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस मौके पर अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना के 25 वर्ष पूरे होना हम सभी के लिए गर्व का क्षण है। यह रजत जयंती वर्ष बीते हुए सफर को याद करने और भविष्य के लिए नए संकल्प लेने का अवसर है।

राज्यपाल ने कहा कि वर्ष 2000 में जब छत्तीसगढ़ का गठन हुआ था, तब यह उम्मीदों और चुनौतियों से भरा राज्य था। पिछले पच्चीस वर्षों में राज्य ने शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, बिजली, सड़कों और संस्कृति सहित हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ एक युवा राज्य है, जिसने कम समय में अपनी प्रतिभा और क्षमताओं से देशभर में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। श्री डेका ने ने इस अवसर पर छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी, तथा राज्य निर्माण का स्वप्न देखने और उसे साकार करने के लिए संघर्ष करने वाले सभी महापुरुषों को नमन किया।

उन्होंने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय को बधाई देते हुए कहा कि राज्य शासन द्वारा जनकल्याण की दिशा में कई योजनाएं संचालित की जा रही हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि, जनजातीय समाज, महिलाएं और युवा वर्ग सशक्त हो रहे हैं।

राज्यपाल ने कहा कि हमारे किसान, मजदूर, युवा और महिलाएं इस राज्य की असली ताकत हैं। उनकी मेहनत और संकल्प ही छत्तीसगढ़ को आत्मनिर्भर और प्रगतिशील बनाएंगे।

उन्होंने कहा कि रजत जयंती वर्ष में हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि आने वाले वर्षों में छत्तीसगढ़ सुशासन, विकास और भाईचारे का आदर्श राज्य बने। हम सब मिलकर अपने संसाधनों का संतुलित और बेहतर उपयोग करते हुए छत्तीसगढ़ को देश के अग्रणी राज्यों में शामिल करेंगे।

राज्यपाल ने प्रदेशवासियों को छत्तीसगढ़ राज्योत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और प्रदेश के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

स्वागत उद्बोधन संस्कृति एवं पर्यटन विभाग के सचिव डॉक्टर रोहित यादव ने दिया। उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य की 25 वर्षों की विकास यात्रा को रेखांकित करते हुए ज्यादा से ज्यादा लोगों को राज्योत्सव में आकर विकास प्रदर्शनी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद उठाने का आग्रह किया। आभार प्रदर्शन संचालक श्री विवेक आचार्य ने किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने समारोह में प्रस्तुति देने वाले गायक श्री आदित्य नारायण, पद्मश्री डोमार सिंह सहित अन्य कलाकारों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

राज्यपाल ने लोकसभा अध्यक्ष को स्मृति चिन्ह भेंट किया

राज्यपाल श्री रमेन डेका ने लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला के राजभवन आगमन पर उनका स्वागत किया और उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किया। इस अवसर पर राज्य की प्रथम महिला श्रीमती रानी डेका काकोटी भी उपस्थित थीं।

इफको का किसान दिवस

नैनो उर्वरकों ने किसानों में नई उम्मीद जगाई

बालोद। ग्राम परसोदा, जिला बालोद में इफको द्वारा किसान दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि श्री दिनेश गांधी (उप प्रबंधक कृषि सेवाएं) इफको रायपुर रहें। कार्यक्रम का संचालन इफको के क्षेत्रीय अधिकारी शुभम काले द्वारा किया गया। कार्यक्रम में किसानों को इफको का विस्तृत परिचय दिया गया एवं उत्पाद-मान्यता बताई गई। मुख्य अतिथि द्वारा इफको के किसानों को कम कीमत पर अधिक लाभ देने वाले उत्पाद नैनो उर्वरक पर प्रकाश डाला। दानेदार उर्वरकों के दुष्प्रभाव से बचना और एक बेहतर विकल्प के तौर पर नैनो उर्वरकों की प्रस्तुति दी गई एवं साथ में दानेदार उर्वरकों के संभावित दुष्प्रभावों के बारे में किसानों को जागरूक किया, और उनके स्थायी समाधान के रूप में इफको नैनो डी.ए.पी. और नैनो यूरिया का सुझाव दिया गया।

इफको के प्रतिनिधियों ने स्पष्ट किया की इफको किसानों के प्रति समर्पित संस्था है और उनके उत्पाद किसानों को कम लागत पर अधिक लाभ दिलाने के उद्देश्य से विकसित किए गए हैं। यह कार्यक्रम दानेदार उर्वरकों से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में सतर्कता बढ़ाने हेतु आयोजित की गयी व नैनो उर्वरक के फायदे और उपयोग विधि पर विस्तार से जानकारी दी गई।

इसके बाद सभी उपस्थित किसानों को ग्राम परसोदा के कृषक श्री कन्हैया लाल साहू के खेत पर लगे प्रदर्शन प्रक्षेत्र में इफको नैनो उर्वरकों के लाभ का सीधा परिणाम जमीनी प्रदर्शन दिखाया गया। कार्यक्रम में कृषकों ने स्वयं खेत पर जाकर नैनो उर्वरकों के फायदों को अनुभव किया और परिणाम देखकर समूह ने नैनो उर्वरकों के उपयोग का दृढ़ निर्णय लिया।

इसके बाद किसानों को इफको जैव उर्वरक पर भी विस्तृत जानकारी दी गई। एवं चयनित किसानों को इफको की ओर से एन.पी.के. तरल कंसोटिया प्रदान की गई। कार्यक्रम ने किसानों में उर्वरक चयन के प्रति जागरूकता बढ़ाई और नैनो उर्वरकों के प्रति सकारात्मक रूझान बनाया। आगे भी इफको द्वारा ऐसे ही किसान-केंद्रित शिक्षा प्रदान करने की बात कहीं गई एवं कार्यक्रम का समापन किया गया।